58-सूरत-मुजादिला

इस मदनी सूरत में '3' रूकू और '22' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِىْ تُجَادِلُكَ فِىْ زَوْجِهَا وَ تَشْتَكِىْۤ اِلَى اللّٰهِ ۖۗ وَ اللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝١ اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآئِهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ؕ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـئِىْ وَلَدْنَهُمْ ؕ وَ
اِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَ زُوْرًا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝٢ وَ الَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ ثُمَّ
يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ؕ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٣
فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ؕ
ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ؕ وَ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٤ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَ قَدْ اَنْزَلْنَاۤ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ؕ وَ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٥ يَوْمَ
يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَ نَسُوْهُ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ۝٦

आयत नं० 01 से 06

नोटः- इस सूरत की शुरू की आयतें उतरने की वजह एक ख़ास क़िस्सा है कि एक बार हज़रत औस ने अपनी बीवी हज़रत ख़ौला को यह कह दिया कि तू मेरे लिए मेरी मां जैसी है यानी हराम है इसको ज़िहार कहते हैं। इस्लाम से पहले अगर कोई अपनी बीवी को ज़िहार कर दे तो वो औरत अपने शौहर के लिए सदा के लिए हराम हो जाती थी फिर निकाह की कोई सूरत न थी। हज़रत ख़ौला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास इसका शरई हुक्म जानने के लिए पहुंची उस वक़्त इस बारे में कोई हुक्म नहीं आया था। हज़रत ख़ौला कहती रहीं कि जब मेरे शौहर ने तलाक़ का नाम भी नहीं लिया तो तलाक़ कैसे हो जाएगी। उनके बार-बार सवाल करने को बहस कहा गया। फिर वो अल्लाह तआला से अपनी परीशानी की फ़रियाद करने लगीं। इस पर ये आयतें उतरीं:-

बेशक अल्लाह तआ़ला ने उस औरत की बात सुन ली जो आपसे अपने शौहर के बारे में बहस कर रही थी और (अपने दुःख व ग़म की) **अल्लाह तआ़ला से फ़रियाद करती थी, और अल्लाह तआ़ला तुम दोनों की बातें सुन रहा था,** (और) **अल्लाह तआ़ला** (तो) **सब कुछ सुनने वाला सब कुछ देखने वाला है** (तो उसकी बात को कैसे न सुनता)**(01) तुम में जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं** (जैसे कह देते हैं कि तू मेरी मां की जगह है तो यह कहने से) **वो** (बीवियां) **उनकी माएं नहीं** (हो जाती) **हैं, उनकी माएं तो बस वो ही हैं जिन्होंने उनको जन्म दिया है, और वो** (जो कि बीवियों को मां कह देते हैं) **बेशक एक बुरी और झूट बात कहते हैं** (इसलिए गुनाह ज़रूर होगा)**, और** (अगर इस ग़लती को सुधार लें और इस गुनाह की मुआफ़ी चाहें तो वो गुनाह मुआफ़ भी हो जाएगा क्योंकि) **बेशक अल्लाह तआ़ला मुआफ़ कर देने वाले बख़्श देने वाले हैं(02) और जो लोग अपनी बीवियों के साथ ज़िहार करते हैं फिर अपनी कही हुई बात को लौटाना चाहते हैं** (यानी बीवियों से मिलाप चाहते हैं) **तो उनके ज़िम्मे एक ग़ुलाम या बान्दी का आज़ाद करना है इससे पहले कि दोनो** (मियां-बीवी) **आपस में मिलाप करें, इस** (जुर्माने का हुक्म करने) **से तुम को नसीहत की जाती है** (ताकि आगे को ध्यान रक्खें)**, और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है(03) फिर जो कोई ऐसा न कर सके** (कि ग़ुलाम, बान्दी आज़ाद करे) **तो उस के ज़िम्मे लगातार दो महीने के रोज़े हैं इससे पहले कि दोनो** (मियां बीवी) **आपस में मिलाप करें फिर जिससे यह भी न हो सके तो उसके ज़िम्मे साठ ग़रीबों को खाना खिलाना है, यह हुक्म इसलिए** (बयान किया गया) **है ताकि** (इस हुक्म से जुड़ी भलाइयां पाने के अलावा) **अल्लाह और रसूल पर ईमान** (भी) **ले आओ** (यानी उन हुक्मों की तस्दीक़ भी करो कि ईमान से जुड़े फ़ाइदे भी हासिल हों)**, और ये अल्लाह की** (बान्धी हुई) **हदें** (हैं यानी अल्लाह के क़ानून) **हैं, और काफ़िरों के लिए** (जो कि इन हुक्मों की तस्दीक़ नहीं करते ख़ासकर) **सख़्त दर्दनाक अज़ाब होगा(04)** (और कुछ इसी हुक्म की बात नहीं बल्कि) **जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं** (चाहे किसी हुक्म में करें जैसे मक्के के काफ़िर) **वो** (दुनिया में भी) **ऐसे रूसवा होंगे जैसे इन से पहले लोग रूसवा हुए** (जैसा कि कई जंगों में ऐसा ही हुआ) **और** (सज़ा कैसे न हो क्योंकि) **हमने साफ़-साफ़ आयतें उतारी हैं** (तो उनके इनकार पर सज़ा होनी ज़रूरी है)**, और** (यह सज़ा तो दुनिया में होगी और) **काफ़िरों को** (आख़रत में भी) **रूसवाई का अज़ाब होगा(05)** (और यह अज़ाब उस दिन होगा) **जिस दिन उन सब को अल्लाह तआ़ला दोबारा ज़िन्दा करेगा फिर उन सब का किया हुआ उनको बता देगा,** (क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला ने उसको**

लिख कर रक्खा है और ये लोग उस को भूल गये हैं, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर ख़बरदार है (चाहे उनके काम हों या और कुछ हो)**(06)।**

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ مَا يَكُونُ مِن نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ
إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنٰى مِن ذٰلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ۖ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝٧ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَ
يَتَنٰجَوْنَ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوٰنِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ ۫ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَيَقُولُونَ فِي
أَنفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُولُ ۚ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۖ يَصْلَوْنَهَا ۖ فَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝٨ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوٓا
إِذَا تَنٰجَيْتُمْ فَلَا تَتَنٰجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوٰنِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَتَنٰجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ
الَّذِيٓ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝٩ إِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ
اللّٰهِ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝١٠ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوٓا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوا
يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۖ وَإِذَا قِيلَ انشُزُوا فَانشُزُوا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ ۙ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ۚ وَ
اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝١١ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوٓا إِذَا نٰجَيْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ۚ
ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطْهَرُ ۚ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝١٢ ءَأَشْفَقْتُمْ أَن تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ
نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ۚ فَإِذْ لَمْ تَفْعَلُوا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ وَأَطِيعُوا اللّٰهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَ
اللّٰهُ خَبِيرٌ ۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝١٣

आयत नं० 07 से 13

क्या आप ने नहीं देखा (यानी इस पर ध्यान नहीं किया) **कि अल्लाह तआ़ला सब कुछ जानता है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है,** (और) **तीन आदमी अकेले में कोई बात ऐसी नहीं कर पाते जिसमें चौथा वो** (यानी अल्लाह तआ़ला) **न हो और न पांच की** (ऐसी बात) **होती है जिसमें छटा वो न हो और न इस** (गिनती) **से कम** (में होती है जैसे दो या चार आदमियों में) **और न इससे ज़्यादा** (में होती है जैसे छः या सात या ज़्यादा आदमियों में) **मगर वो** (हर हालत में) **उन लोगों के साथ होता है** (चाहे) **वो लोग कहीं भी हों, फिर उन** (सब) **को**

क़ियामत के दिन उनके किये हुए काम बता देगा, बेशक अल्लाह तआ़ला को हर बात की पूरी ख़बर है(07) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा कि जिन को छुप कर बातें करने से मना कर दिया था (मुराद यहूदी और मुनाफ़िक़ हैं जो मुसलमानों को तकलीफ़ पहुंचाने के लिए ऐसी साज़िशें करते थे, मगर) **फिर** (भी) **वो वो ही काम करते हैं जिन से उनको मना कर दिया गया था और गुनाह और ज़ुल्म और रसूल की नाफ़रमानी की बातें करते हैं, और वो लोग** (ऐसे हैं कि) **जब आप के पास आते हैं तो आप को ऐसे तरीक़े से सलाम करते हैं जिस** (तरीक़े) **से अल्लाह ने आप को सलाम नहीं किया** (यानी अस्सलामु अलैकुम कहने के बजाए अस्सामु अलैकुम कहते थे जिसका मतलब बददुआ है) **और अपने जी में** (या अपने आपस में) **कहते हैं कि** (अगर ये पैग़म्बर हैं तो) **अल्लाह तआ़ला हम को हमारे इस कहने पर** (जिसमें सरासर आप की बेअदबी है फ़ौरन) **सज़ा क्यों नहीं देता,** (आगे इस बात का जवाब है कि फ़ौरन अज़ाब न आने में कुछ भेद हैं और) **उन** (की सज़ा) **के लिए जहन्नम काफ़ी है उसमें ये लोग** (ज़रूर) **दाख़िल होंगे तो वो बुरा ठिकाना है(08)** (आगे ईमान का दावा करने वालों को इस बात से रोका गया है कि) **ऐ ईमान वालो जब तुम** (किसी ज़रूरत से) **छुप कर बातें करो तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की बात मत करो और भलाई के कामों की और परहेज़गारी की बातें करो, और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम सब जमा किये जाओगे(09) ऐसी बातें तो शैतान की तरफ़ से** (यानी उसके बहकाने से होती) **हैं ताकि मुसलमानों को दुख तकलीफ़ में डाले** (जैसा यहूदी और मुनाफ़िक़ करते थे) **और** (आगे उन मुसलमानों को तसल्ली है कि दुखी न हुआ करें क्योंकि) **वो** (शैतान) **बिना अल्लाह के इरादे के उन** (मुसलमानों) **को** (ज़रा भी) **नुक़सान नहीं पहुंचा सकता** (मतलब यह कि अगर मान लो वो शैतान के बहकाने से तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई चाल चल रहे हैं तब भी वो नुक़सान अल्लाह की मर्ज़ी के बिना तुम को नहीं पहुंच सकता फिर क्यों फ़िक्र में पड़ते हो)**, और मुसलमानों को** (हर बात में) **अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए(10)** (आगे मजलिस में बाद में आने वालों को जगह देने का अदब सिखाया गया है कि) **ऐ ईमान वालो जब तुम से कहा जाए** (यानी पैग़म्बर या मजलिस का बड़ा कहे) **कि मजलिस में जगह खोल दो** (यानी मिल कर बैठ जाओ ताकि आने वाले को भी जगह मिल जाए) **तो तुम जगह खोल दिया करो** (और आने वाले को जगह दे दिया करो) **अल्लाह तआ़ला तुम को** (जन्नत में) **खुली जगह देगा, और जब** (किसी ज़रूरत से) **यह कहा जाए कि** (मजलिस से) **उठ जाओ तो उठ जाया करो अल्लाह तआ़ला** (इस हुक्म के मानने की वजह से) **तुम में ईमान वालों के और** (ईमान वालों में) **उन लोगों के जिनको** (दीन का)

इल्म (ज़्यादा) **दिया गया है** (आख़रत के) **दर्जे ऊंचे कर देगा, और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर** (है कि किस का काम ईमान व दिल की सच्चाई के साथ) **है**(11) **ऐ ईमान वालो जब तुम रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **से अकेले में बात करना चाहो तो अपनी उस बात से पहले कुछ ख़ैरात** (ग़रीबों को) **दे दिया करो, यह तुम्हारे लिए** (सवाब हासिल करने के वास्ते) **बेहतर है और** (गुनाहों से) **पाक होने का अच्छा सामान** (है और मुनाफ़िक़ बेवजह सताने से रूकेंगे और इसमें उनका इम्तिहान भी) **है, फिर अगर तुम्हारे पास** (ख़ैरात करने के लिए) **कुछ न हो** (और अकेले में बात करने की ज़रूरत हो) **तो अल्लाह तआ़ला बड़ा बख़्शने वाला बहुत महरबान** (है इस सूरत में उसने तुम को मुआफ़ कर दिया) **है**(12) **क्या तुम** (में के कुछ लोग) **अकेले में अपनी बात करने से पहले ख़ैरात करने से डर गये, तो** (अच्छा) **जब तुम** (इसको) **न कर सके और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे हाल पर महरबानी की** (कि बिल्कुल इस को मुआफ़ कर दिया क्योंकि जिन लोगों को बात करने से रोकने के लिए ऐसा किया गया यानी मुनाफ़िक़ व यहूदी वो कन्जूसी की वजह से रूक गये जो बेबात वक़्त ख़राब किया करते थे) **तो तुम** (दूसरी इबादतों के पाबन्द रहो यानी) **नमाज़ के पाबन्द रहो और** (जिन पर ज़कात वाजिब है) **ज़कात दिया करो और अल्लाह व रसूल का कहना माना करो, और अल्लाह को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है**(13)।

नोटः- कुछ लोग अपनी तसल्ली और मशवरे के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अकेले में बात करना चाहते थे मुनाफ़िक़ों ने यह चाल चली कि अकेले में बात करने के लिए वक़्त लेकर देर तक बात करते थे। इससे परीशानी के साथ-साथ हुज़ूर का क़ीमती वक़्त बर्बाद होता था। अल्लाह तआ़ला ने आप से बोझ हल्का करने के लिए यह हुक्म उतारा कि अकेले में पैग़म्बर से बात करने के लिए कुछ ख़ैरात करें मुनाफ़िक़ लोग अपनी कंजूसी की वजह से ऐसा न कर सके इस तरह परीशान करने से रूक गये। फिर ग़रीब मुसलमानों की ज़रूरत का ध्यान करते हुए यह हुक्म बदल दिया गया और लोगों को पहले की तरह ज़रूरत में बात करने की इजाज़त दे दी गई मगर मुनाफ़िक़ राज़ खुल जाने के डर से फिर भी रूके रहे।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ط مَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ لا وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ
يَعْلَمُونَ ﴿١٤﴾ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ط إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً

فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٦﴾ لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئًا ۚ
أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَ
يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ۚ أَلَآ إِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُونَ ﴿١٨﴾ اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَأَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ۚ أُولٰٓئِكَ
حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ۚ أَلَآ إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿١٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ يُحَآدُّونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُۥٓ أُولٰٓئِكَ فِي
الْأَذَلِّينَ ﴿٢٠﴾ كَتَبَ اللّٰهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي ۚ إِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢١﴾ لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
يُوَآدُّونَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُولَهُۥ وَلَوْ كَانُوٓا اٰبَآءَهُمْ أَوْ أَبْنَآءَهُمْ أَوْ إِخْوٰنَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ ۚ أُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِي
قُلُوبِهِمُ الْإِيمٰنَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِّنْهُ ۚ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا ۚ رَضِيَ اللّٰهُ
عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ أُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ۚ أَلَآ إِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٢٢﴾

आयत नं० 14 से 22

क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो कि ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जिनसे अल्लाह सख़्त नाराज़ है (मुराद इससे मुनाफ़िक़ लोग और यहूदी व दूसरे काफ़िर हैं), **ये** (मुनाफ़िक़) **लोग न तो** (पूरे-पूरे) **तुम में हैं और न** (पूरे-पूरे) **उनही में** (बल्कि देखने में तो तुम से मिले हुए हैं और दिल से काफ़िरों के साथ हैं) **और झूटी बात पर क़समें खा जाते** (हैं वो झूटी बात ये ही है कि हम मुसलमानों में शामिल) **हैं और वो** (ख़ुद भी) **जानते** (हैं कि हम झूटे) **हैं(14) अल्लाह तआ़ला ने उनके लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रक्खा है,** (क्योंकि) **बेशक वो** (कुफ़्र शिर्क जैसे) **बुरे-बुरे काम किया करते थे(15)** (और उन्हीं बुरे कामों में से एक बुरा काम यह है कि) **उन्होंने अपनी** (उन झूटी) **क़समों को** (अपने बचाव के लिए) **ढाल बना रक्खा है** (ताकि मुसलमान हम को मुसलमान समझ कर हमारी जान व माल से न उलझें) **फिर** (दूसरों को भी) **अल्लाह की राह** (यानी दीन से) **रोकते रहते** (है यानी बहकाते रहते) **हैं तो** (इस वजह से) **उनके लिए रूसवा कर देने वाला अज़ाब होने वाला है(16)** (और जब वो अज़ाब होने लगेगा तो) **उनके माल और औलाद अल्लाह** (के अज़ाब) **से उनको ज़रा न बचा सकेंगे,** (और) **ये लोग दोज़ख़ी हैं,** (और) **वो लोग उस** (दोज़ख़) **में सदा-सदा रहेंगे(17)** (और वो अज़ाब उस दिन होगा) **जिस दिन अल्लाह तआ़ला उन सब को दोबारा ज़िन्दा करेगा तो ये उसके सामने भी** (झूटी) **क़समें खा जाएंगे जिस तरह तुम्हारे सामने क़समें खा जाते हैं और यह समझेंगे कि हम किसी अच्छी हालत में हैं** (कि इस

झूटी क़सम से बच जाएंगे), **याद रक्खो ये लोग बड़े ही झूटे हैं** (कि अल्लाह के सामने भी झूट बोलने से न चूके)(18) **उन पर शैतान ने पूरी तरह क़ब्ज़ा कर लिया है** (कि उसके कहने पर चल रहे हैं) **तो उसने उनको अल्लाह की याद भुला दी** (यानी उस के हुक्मों को छोड़ बैठे), **ये लोग शैतान का गिरोह है, अच्छी तरह सुन लो कि शैतान का गिरोह ज़रूर बर्बाद होने वाला है** (आख़रत में तो ज़रूर और कभी दुनिया में भी)(19) **जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं ये लोग** (अल्लाह के नज़दीक) **बहुत ज़लील लोगों में हैं**(20) (और) **अल्लाह ने यह बात** (पहले ही) **लिख दी है कि मैं और मेरे पैग़म्बर हावी रहेंगे, बेशक अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त ताक़त वाला** (है इसलिए वो जिसको चाहता है जिता देता) **है**(21) (और) **जो लोग अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर** (पूरा-पूरा) **ईमान रखते हैं आप उन को न देखेंगे कि वो ऐसे लोगों से दोस्ती रक्खें जो अल्लाह और उसके रसूल के मुख़ालिफ़ हैं चाहे वो उनके बाप या बेटे या उनके भाई या उनके ख़ानदान वाले ही क्यों न हों, उन लोगों के दिल में अल्लाह तआ़ला ने ईमान जमा दिया है और उन** (के दिलों) **को अपने नूरे करम से ताक़त दी है, और** (आख़रत में) **उन को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे से नहरें बहती होंगी जिनमें वो सदा रहेंगे, अल्लाह तआ़ला उन से राज़ी होगा और वो अल्लाह से राज़ी होंगे, ये लोग अल्लाह का गिरोह है, ख़ूब सुन लो कि अल्लाह ही का गिरोह कामयाब होने वाला है**(22)।

नोटः- काफ़िरों के साथ अच्छा सलूक व हमदर्दी और भलाई करना और उन पर अहसान करना और अच्छे अख़लाक़ से पेश आना इन्सानी फ़र्ज़ है। और उनसे कारोबारी मुआमला करने और समाजी मेल जोल की भी इजाज़त है ये बातें दिली दोस्ती में दाख़िल नहीं। और जो मुसलमान दीन के ख़िलाफ़ काम करते हैं और बड़े गुनाहों में गरिफ़्तार हैं उन के साथ भी किसी मुसलमान को दोस्ती नहीं रखनी चाहिए।

59-सूरत-हश्र

इस मदनी सूरत में '3' रूकू और '24' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

سَبَّحَ لِلّٰہِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الۡاَرۡضِ ۚ وَ ہُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ ﴿۱﴾ ہُوَ الَّذِیۡۤ اَخۡرَجَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا مِنۡ اَہۡلِ
الۡکِتٰبِ مِنۡ دِیَارِہِمۡ لِاَوَّلِ الۡحَشۡرِ ؕ مَا ظَنَنۡتُمۡ اَنۡ یَّخۡرُجُوۡا وَ ظَنُّوۡۤا اَنَّہُمۡ مَّانِعَتُہُمۡ حُصُوۡنُہُمۡ مِّنَ اللّٰہِ
فَاَتٰىہُمُ اللّٰہُ مِنۡ حَیۡثُ لَمۡ یَحۡتَسِبُوۡا ٭ وَ قَذَفَ فِیۡ قُلُوۡبِہِمُ الرُّعۡبَ یُخۡرِبُوۡنَ بُیُوۡتَہُمۡ بِاَیۡدِیۡہِمۡ وَ اَیۡدِی
الۡمُؤۡمِنِیۡنَ ٭ فَاعۡتَبِرُوۡا یٰۤاُولِی الۡاَبۡصَارِ ﴿۲﴾ وَ لَوۡ لَاۤ اَنۡ کَتَبَ اللّٰہُ عَلَیۡہِمُ الۡجَلَآءَ لَعَذَّبَہُمۡ فِی الدُّنۡیَا ؕ وَ لَہُمۡ فِی
الۡاٰخِرَۃِ عَذَابُ النَّارِ ﴿۳﴾ ذٰلِکَ بِاَنَّہُمۡ شَآقُّوا اللّٰہَ وَ رَسُوۡلَہٗ ۚ وَ مَنۡ یُّشَآقِّ اللّٰہَ فَاِنَّ اللّٰہَ شَدِیۡدُ الۡعِقَابِ ﴿۴﴾ مَا
قَطَعۡتُمۡ مِّنۡ لِّیۡنَۃٍ اَوۡ تَرَکۡتُمُوۡہَا قَآئِمَۃً عَلٰۤی اُصُوۡلِہَا فَبِاِذۡنِ اللّٰہِ وَ لِیُخۡزِیَ الۡفٰسِقِیۡنَ ﴿۵﴾

आयत नं० 01 से 05

नोटः- कुछ यहूदी क़बीलों के साथ मुसलमानों ने सुलह का समझौता कर रक्खा था मगर उन्होंने ग़द्दारी की और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़त्ल की साज़िश रची तो उनको जिला वतनी (देश बदर) की सज़ा दी गई इन आयतों में उस का बयान हैः-

अल्लाह की तस्बीह करते हैं सब जो कुछ आसमानों और ज़मीन में (मख़लूक़ें) **हैं, और वो ज़बरदस्त** (ताक़त वाला और) **हिकमत वाला है(01) वो ही है जिसने** (इन) **किताब वाले काफ़िरों** (यानी क़बीला बनू नसीर के यहूदियों) **को उनके घरों से पहली बार उखाड़ करके निकाल दिया** (यानी यह मुसीबत उन पर पहली बार आई है)**, तुम ने** (ऐ मुसलमानो उन का साज़ो-सामान देख कर) **यह सोचा भी न था कि वो** (कभी अपने घरों से) **निकलेंगे और** (ख़ुद) **वो यह समझे हुए थे कि उनके क़िले उन को अल्लाह** (के अज़ाब) **से बचा लेंगे** (यानी अपने क़िलों की मज़बूती पर उन्हें ऐसी तसल्ली थी कि उनमें रहते हुए उन्हें कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकता) **सो उन पर**

अल्लाह (का अज़ाब) **ऐसी जगह से पहुंचा कि उन को ध्यान** (और गुमान) **भी न था** (कि बेसरो सामान वाले मुसलमानों के हाथों निकाले गये), **और उनके दिलों में** (अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों का) **रौब डाल दिया** (कि उस रौब की वजह से निकलने का इरादा किया और उस वक़्त यह हालत थी कि) **अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों से भी और मुसलमानों के हाथों से भी उजाड़ रहे** (थे यानी ख़ुद भी कड़ी तख़्ता ले जाने के वास्ते अपने मकानों को तोड़ रहे थे और मुसलमान भी उनकी ग़द्दारी की वजह से उनके दिलों को ठेस पहुंचाने के लिए तोड़ते) **थे तो ऐ समझदारों** (इस हालत को देख कर) **सबक़ लो** (कि अल्लाह व रसूल की मुख़ालफ़त का अन्जाम कभी-कभी दुनिया में भी बहुत बुरा होता है)(02) **और अगर अल्लाह तआ़ला उनके नसीब में देश बदर होना न लिख चुका होता तो उनको दुनिया ही में** (क़त्ल की) **सज़ा देता, और** (भले ही दुनिया में क़त्ल की सज़ा से बच गये लेकिन) **उन के लिए आख़िरत में दोज़ख़ का अज़ाब** (तैयार) **है**(03) (और) **यह** (दुनिया व आख़िरत की सज़ा) **इस वजह से है कि उन लोगों ने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त की, और जो आदमी अल्लाह** (और रसूल) **की मुख़ालफ़त करता है तो अल्लाह तआ़ला सख़्त सज़ा देने वाला है**(04) (आगे उस ऐतराज़ का जवाब है कि मुसलमानों ने जो उन को क़िलों से बाहर निकलने को मजबूर करने के लिए उनके बाग़ों के कुछ पेड़ काट दिये और कुछ जला दिये थे वो कहते थे कि मुसलमानों ने ऐसा बुरा काम क्यों किया तो) **जो खजूरों के पेड़ तुमने काट दिये** (या जो जला दिये) **या उनको अपनी जड़ों पर** (उसी तरह) **खड़ा रहने दिया तो** (यह सब कुछ) **अल्लाह ही के हुक्म** (और मर्ज़ी) **से था** (ताकि) **काफ़िरों को रूसवा** (और ज़लील) **करे** (यानी दोनो बातों में भलाई छुपी है कि काटने से उनका दिल दुखेगा और न काटने से भी जलेंगे कि हमारे बाद इनको मुसलमान बरतेंगे)(05)।

नोटः- पेड़ों के काट देने व जला देने या उसी तरह छोड़ देने को अल्लाह का हुक्म और मर्ज़ी बताया गया इससे मालूम हुआ कि सहाबा किराम के मशवरे और फ़ैसले शरीअत के हुक्म हैं।

وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ
يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ۞ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِى الْقُرْبٰى
وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَیْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ؕ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۗ وَ
مَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۞ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ

دِيَارِهِمْ وَ اَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا وَّ يَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۚ ۸ وَ
الَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَ الْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَ لَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً
مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَ لَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ؕ۟ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۚ ۹
وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا
غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۚ ۱۰

आयत नं० 06 से 10

और (उनके मालों का हुक्म यह है कि) **जो कुछ अल्लाह ने अपने रसूल को उन से दिलवा दिया सो** (उसमें तुम को कोई मेहनत नहीं करनी पड़ी जैसा कि) **तुम ने उस** (के हासिल करने) **पर न घोड़े दौड़ाए और न ऊंट** (मतलब यह कि न सफ़र की मेहनत हुई कि दूर जाना पड़े और न जंग की इस माल में माले ग़नीमत की तरह तुम हक़दार नहीं) **लेकिन अल्लाह तआला** (की आदत है कि) **अपने रसूलों को** (अपने दुशमनों में से) **जिस पर चाहे हावी कर देता** (है यानी सिर्फ़ रौब से हरा देता है जिसमें किसी को कुछ मेहनत नहीं करनी पड़ती ऐसा ही यहां हुआ इस माल में पूरा हक़ व इख़्तियार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ही) **है, और अल्लाह तआला को हर चीज़ पर पूरी कुदरत है(06) जो कुछ अल्लाह तआला** (इसी तरह) **अपने रसूल को दूसरी बस्तियों के** (काफ़िर) **लोगों से दिलवादे तो** (उसमें भी तुम्हारा कोई मालिकाना हक़ नहीं बल्कि) **वो** (भी) **अल्लाह का हक़ है** (यानी वो जिस तरह चाहे उसमें हुक्म दे जैसा कि और चीज़ों में भी उसी का हक़ है) **और रसूल का** (हक़ है कि अल्लाह ने उन को हर तरह का हक़ दे दिया है) **और** (रसूल के) **रिशतेदारों का** (हक़ है) **और यतीमों का** (हक़ है) **और ग़रीबों का** (हक़ है) **और मुसाफ़िरों का** (हक़ है यानी इन सब पर पैग़म्बर की मर्ज़ी से ख़र्च किया जाएगा और यह हुक्म इसलिए दिया गया) **ताकि वो** (मालेफ़ई) **तुम्हारे मालदारों के क़ब्ज़े में न आजाए** (जैसा कि जहालत के ज़माने में जंगों में हासिल हुए सब माल बड़े लोग खा जाते थे और ग़रीबों को कुछ न मिलता था इसलिए अल्लाह तआला ने रसूल की राय पर रक्खा और ख़र्च के मौक़े भी बता दिये)**, और** (जब यह मालूम हो गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की राय पर होने में भेद व हिकमत है तो) **रसूल तुम को जो कुछ दे दिया करें वो ले लिया करो और जिस चीज़** (के लेने) **से तुम को रोक दें तुम रूक जाया करो** (और ये ही हुक्म है सभी कामों और हुक्मों में भी) **और अल्लाह से**

डरो, बेशक अल्लाह तआ़ला (मुख़ालफ़त करने पर) **सख़्त सज़ा देने वाला है(07)** (और यूं तो माले फ़ई में सब ग़रीबों का हक़ है लेकिन) **उन ग़रीब मुहाजिरों का** (ख़ास कर) **हक़ है जो अपने घरों से और अपने मालों से** (सताकर व जबरन) **अलग कर दिये गये** (यानी काफ़िरों ने उन को इतना तंग किया कि घर बार छोड़ कर चले जाने पर मजबूर हुए और इस हिजरत से) **वो अल्लाह तआ़ला की महरबानी** (यानी जन्नत) **और रज़ामन्दी के चाहने वाले हैं** (किसी दुनियावी मतलब से हिजरत नहीं की) **और वो** (लोग) **अल्लाह और उसके रसूल** (के दीन) **की मदद करते हैं,** (और) **ये ही लोग** (ईमान के) **सच्चे हैं(08) और** (ऐसे ही) **उन लोगों का** (भी हक़ है) **जो इस जगह** (यानी मदीने) **में** (मुहाजिरों के आने से) **पहले ही से ईमान के साथ रहते हैं** (मुराद इससे अन्सारी हज़रात है जो पहले ही से मदीने में रहते थे और मुहाजिरों के मदीने आने से पहले ईमान ला चुके थे) **जो उनके पास हिजरत करके आता है उससे ये लोग मुहब्बत करते हैं और मुहाजिरों को** (माले ग़नीमत में से) **जो कुछ मिलता है उससे ये** (अन्सार मुहब्बत की वजह से) **अपने दिलों में कोई तंगी नहीं पाते और** (बल्कि इससे भी बढ़ कर मुहब्बत करते हैं कि खाने पीने में उनको) **अपने से आगे रखते हैं चाहे उन पर फ़ाक़ा ही हो** (यानी ख़ुद कभी-कभी भूके बैठे रहते हैं और मुहाजिरों को खिला देते हैं), **और** (सचमुच) **जो आदमी अपने जी के लालच से बचाया गया** (जैसे ये लोग हैं) **ऐसे ही लोग कामयाब होने वाले हैं(09) और उन लोगों का** (भी इस माले फ़ई में हक़ है) **जो इन** (मुहाजिरों व अन्सार) **के बाद आए** (या आएंगे) **जो दुआ करते हैं कि या रब हमारे हम को बख़्श दे और हमारे भाइयों को** (भी) **जो हम से पहले ईमान ला चुके हैं और हमारे दिलों में ईमान वालों की तरफ़ से बैर न होने दीजिए या रब हमारे आप बड़े हमदर्द व महरबान हैं(10)**

नोटः- दुशमनों से जिहाद में जंग के बाद जो जंगी सामान व माल मिलता है उसे माले ग़नीमत कहते हैं और बिना जंग किये जो माल मिल जाए उसे माले फ़ई कहते हैं।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَ
لَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّ اِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ⑪ لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا
يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَ لَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَ لَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ⑫

لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٣﴾ لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ
قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَاۗءِ جُدُرٍ ۭ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ۭ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٤﴾ ۚ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٥﴾ ۚ كَمَثَلِ
الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّىْ بَرِيْۗءٌ مِّنْكَ اِنِّىْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ فَكَانَ
عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزٰۗؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٧﴾ ۧ

आयत नं० 11 से 17

क्या आपने इन मुनाफ़िक़ों की हालत नहीं देखी कि अपने (मज़हबी) **भाइयों** (यानी) **किताब वाले** (यहूदी) **काफ़िरों से कहते हैं** (यानी कहते थे) **कि** (हम हर हाल में तुम्हारे साथ हैं बस) **अगर तुम** (अपने वतन से जबरन) **निकाले गये तो हम** (भी) **तुम्हारे साथ** (अपने वतन से) **निकल जाएंगे और तुम्हारे बारे में हम कभी किसी का कहना न मानेंगे** (यानी हम को चाहे कोई कैसा ही समझाए कि तुम्हारा साथ न दें लेकिन हम न मानेंगे) **और अगर तुम में किसी की लड़ाई हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे, और अल्लाह गवाही देता है कि वो बिल्कुल झूटे हैं(11) अगर वो** (यहूदी) **निकाले गये तो ये** (मुनाफ़िक़ लोग) **उनके साथ नहीं निकलेंगे और अगर उनसे लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद न करेंगे, और अगर** (मान लो) **उन की मदद भी की** (और लड़ाई में शरीक हुए) **तो पीठ फेर कर भागेंगे फिर** (इनके भाग जाने के बाद) **उन** (यहूदियों) **की कोई मदद न होगी** (यानी जो मददगार थे वो तो भाग गये और दूसरा भी कोई मददगार न होगा बस अन्जामकार मात खाएंगे जैसा कि ऐसा ही हुआ)(12) **बेशक तुम लोगों का डर इन** (मुनाफ़िक़ों) **के दिलों में अल्लाह से भी ज़्यादा है** (यानी अल्लाह से सचमुच डरते तो कुफ़्र छोड़ कर ईमान लाते लेकिन तुम्हारे डर की वजह से काफ़िरों का साथ न देंगे, और) **यह** (उनका तुम से डरना और अल्लाह से न डरना) **इस वजह से है कि वो ऐसे लोग हैं कि** (कुफ़्र की वजह से अल्लाह तआला की शान को) **समझते नहीं(13)** (और ये यहूदी और मुनाफ़िक़ अलग-अलग तो तुम्हारे मुक़ाबिले की क्या हिम्मत करते) **ये लोग** (तो) **सब मिलकर भी तुम से न लड़ेंगे मगर हिफ़ाज़त वाली बस्तियों में या** (क़िले की) **दीवार की आड़ में,** (बात यह है कि) **उन की लड़ाई आपस** (ही) **में बड़ी तेज़ है** (मगर मुसलमानों के मुक़ाबिले में कोई चीज़ नहीं), **तुम उन को इकट्ठे समझते हो हालांकि उनके दिल अलग-अलग हैं** (यानी चाहे मुसलमानों की दुशमनी में एक हो रहे हैं मगर ख़ुद भी तो उनमें

मज़हबी झगड़ा है), **यह** (दिलों की फूट) **इस वजह से है कि वो ऐसे लोग हैं जो** (दीन की) **समझ नहीं रखते(14) इन** (यहूदियों) **की मिसाल** (तो) **उन लोगों की सी है जो इन से कुछ पहले हुए हैं** (यानी बनी क़ुरीज़ा के यहूदी) **जो** (दुनिया में भी) **अपनी करतूत का मज़ा चख चुके हैं** (कि उनकी ग़द्दारी की उन को सज़ा दी गई थी) **और** (आख़रत में भी) **उन के लिए दर्दनाक अज़ाब** (होने वाला) **है(15)** (और इन मुनाफ़िक़ों की) **मिसाल शैतान की सी है** (पहले तो) **इन्सान से कहता है कि तू काफ़िर होजा फिर जब वो काफ़िर हो जाता** (है और कुफ़्र की सज़ा में पकड़ होती) **है** (चाहे दुनिया में चाहे आख़रत में) **तो** (उस वक़्त साफ़ जवाब दे देता है और) **कह देता है कि मेरा तुझ से कोई वास्ता नहीं मैं तो अल्लाह से डरता हूं जो सारे जहानों का रब है(16) तो आख़री अन्जाम दोनों का यह हुआ कि दोनो दोज़ख़ में गये जहां सदा रहेंगे** (एक गुमराह होने की वजह से दूसरा गुमराह करने की वजह से), **और ज़ालिमों की ये ही सज़ा है** (बस जिस तरह शैतान ने इन्सान को बहकाया फिर धोका दिया इसी तरह इन मुनाफ़िक़ों ने यहूदी बनी नज़ीर को धोका दिया और दोनो मुसीबत में फंसे)(17)।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلۡتَنۡظُرۡ نَفۡسٌ مَّا قَدَّمَتۡ لِغَدٍ‌ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ۝١٨ وَلَا
تَكُوۡنُوۡا كَالَّذِيۡنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنۡسٰٮهُمۡ اَنۡفُسَهُمۡ‌ؕ اُولٰٓـئِكَ هُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ ۝١٩ لَا يَسۡتَوِىۡۤ اَصۡحٰبُ النَّارِ وَ اَصۡحٰبُ
الۡجَـنَّةِ‌ؕ اَصۡحٰبُ الۡجَـنَّةِ هُمُ الۡفَآئِزُوۡنَ ۝٢٠ لَوۡ اَنۡزَلۡنَا هٰذَا الۡقُرۡاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيۡتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنۡ خَشۡيَةِ
اللّٰهِ‌ؕ وَتِلۡكَ الۡاَمۡثَالُ نَضۡرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمۡ يَتَفَكَّرُوۡنَ ۝٢١ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىۡ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ‌ۚ عٰلِمُ الۡغَيۡبِ وَ
الشَّهَادَةِ‌ۚ هُوَ الرَّحۡمٰنُ الرَّحِيۡمُ ۝٢٢ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىۡ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ‌ۚ اَلۡمَلِكُ الۡقُدُّوۡسُ السَّلٰمُ الۡمُؤۡمِنُ الۡمُهَيۡمِنُ
الۡعَزِيۡزُ الۡجَـبَّارُ الۡمُتَكَبِّرُ‌ؕ سُبۡحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ۝٢٣ هُوَ اللّٰهُ الۡخَـالِـقُ الۡبَارِئُ الۡمُصَوِّرُ لَهُ الۡاَسۡمَآءُ الۡحُسۡنٰى‌ؕ
يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ‌ۚ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ۝٢٤

आयत नं० 18 से 24

ऐ ईमान वालो (तुम ने कहना न मानने वालों का अन्जाम सुन लिया तो तुम) **अल्लाह से डरते रहो और हर आदमी देख भाल ले कि कल** (क़ियामत) **के वास्ते उसने क्या** (सामान) **भेजा** (है यानी नेक कामों में कोशिश करो जो कि आख़रत की जमा पून्जी) **है, और** (गुनाहों से बचते रहो और) **अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की ख़बर** (है

बस गुनाहों से सज़ा का डर) **है**(18) **और तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने अल्लाह** (के हुक्मों) **से बेपरवाई की** (यानी हुक्मों के ख़िलाफ़ चले) **तो** (उस का असर यह हुआ कि) **अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद उन की जान से उन को बेपरवा बना दिया** (यानी उन की ऐसी समझ मारी गई कि ख़ुद अपने असली नफ़े को न समझा और न हासिल किया), **ये ही लोग नाफ़रमान** (हैं और नाफ़रमानी की सज़ा पाने वाले) **हैं**(19) (और ऊपर जिन दो क़िस्म के लोगों का ज़िक्र हुआ यानी एक वो जो परहेज़गार हैं वो जन्नती हैं दूसरे नाफ़रमान वो दोज़ख़ी हैं और) **जन्नत वाले और दोज़ख़ वाले आपस में बराबर नहीं,** (बल्कि) **जो जन्नत वाले हैं वो लोग कामयाब** (हैं बस तुम को जन्नत वाले होना चाहिए न कि दोज़ख़ वाले क्योंकि दोज़ख़ वाले नाकाम) **हैं**(20) (और ये क़ुरआन की नसीहतें हैं जो कि ऐसा है कि) **अगर हम इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर उतार देते** (और उसमें समझने का माद्दा रख देते और बुराई का माद्दा न रखते) **तो तुम उस को देखते कि अल्लाह के डर से दब जाता और फट जाता** (यानी क़ुरआन का ऐसा असर है मगर इन्सान अपने मज़ों के चक्कर में असर नहीं लेता बस उसको चाहिए कि नेक काम करे और बुराई से रूके ताकि क़ुरआन की नसीहत का उस पर असर हो), **और हम ये मिसालें लोगों के** (नफ़े के) **लिए बयान करते हैं ताकि वो सोचें** (और नफ़ा उठाएं)(21) **वो अल्लाह ऐसा है कि उसके सिवा कोई और माबूद** (बनने के लाइक़) **नहीं वो जानने वाला है छुपी चीज़ों का और खुली चीज़ों का, वो ही बड़ा महरबान रहम वाला है**(22) (और अच्छी तरह जान लो कि) **वो अल्लाह ऐसा** (माबूद) **है कि उसके सिवा कोई और माबूद** (बनने के लाइक़) **नहीं, वो बादशाह है** (सब ऐबों से) **पाक है सलामती वाला है** (अपने बन्दों को डर की चीज़ों से) **अमन देने वाला है** (अपने बन्दों की डर की चीज़ों से) **देख रेख करने वाला है** (यानी मुसीबत भी नहीं आने देता और आई हुई को भी दूर कर देता है) **ज़बरदस्त** (ताक़त वाला) **है ख़राबी का ठीक कर देने वाला है बड़ी शान वाला है, अल्लाह तआ़ला** (जिसकी यह शान है) **लोगों के शिर्क से पाक है**(23) **वो अल्लाह** (सच्चा माबूद है) **पैदा करने वाला है ठीक-ठीक बनाने वाला है सूरत** (शकल) **बनाने वाला है उसके अच्छे-अच्छे नाम** (हैं जो अच्छी-अच्छी ख़ूबियों की दलील) **हैं, सब चीज़ें उसी की तस्बीह करती हैं जो आसमानों और ज़मीन में हैं, और वो ही ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला और) **हिकमत वाला** (है बस ऐसी शान वाले के हुक्मों को मानना ज़रूरी) **है**(24)

नोटः- एक हदीस में है कि जो सुबह के वक़्त तीन बार **"अऊज़ुबिल्लाहिस्समीइल अलीम मिनश्शैतानिर्रजीम"** और उसके बाद तीन बार सूरत हश्र की आख़री तीन आयतें पढ़ले तो अल्लाह तआला सत्तर हज़ार फ़रिशते तैनात कर देते हैं जो शाम तक उसके लिए रहमत की दुआ करते रहते हैं। अगर उस दिन में वो मर गया तो शहादत की मौत मिलेगी। और जिसने शाम को ये ही कलमे तीन बार पढ़ लिये तो ये ही दर्जा उस को मिलेगा। (मज़हरी)

वो आयतें ये हैं:-

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۗ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ
الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۗ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

"अऊज़ुबिल्लाहिस्समीइल अलीम मिनश्शैतानिर्रजीम"

हुवल्लाहुल्लज़ी ला इलाहा इल्लाहू, आलिमुल ग़ैबि वश्शहादति हुवर्रहमानुर्रहीम० हुवल्लाहुल्लज़ी ला इलाहा इल्लाहू, अलमलिकुल क़ुद्दूसुस्सलामुल मूमिनुल मुहैमिनुल अ़ज़ीज़ुल जब्बारूल मुतकब्बिर, सुब्हान अल्लाहि अ़म्मा युश्रिकून० हुवल्लाहुल ख़ालिक़ुल बारिउल मुसव्विरु लहुल अस्माउल हुस्ना, युसब्बिहु लहू माफ़िस्समावाति वलअर्ज़, वहुवल अ़ज़ीज़ुल हकीम०

60-सूरत-मुमतहिना

इस मदनी सूरत में '2' रूकू और '13' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَ عَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَ قَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ
مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَ اِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ۗ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَ
ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ ۖۗ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖۗ وَ اَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَ مَآ اَعْلَنْتُمْ ۗ وَ مَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ
ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝١ اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّ يَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَ
وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ۝٢ لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَ لَآ اَوْلَادُكُمْ ۚۛ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚۛ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۗ وَ اللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٣ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَ الَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا
مِنْكُمْ وَ مِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۫ كَفَرْنَا بِكُمْ وَ بَدَا بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَ الْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى
تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَ مَآ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ رَبَّنَا
عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَ اِلَيْكَ اَنَبْنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝٤ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ اغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ
اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٥ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْيَوْمَ الْاٰخِرَ ۗ وَ مَنْ
يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٦

आयत नं० 01 से 06

नोटः- हज़रत हातिब रज़ि० हिजरत करके मदीना आ गये थे और उनके घर वाले मक्का में थे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब मक्का पर हमला करने का इरादा किया तो इस बात को राज़ में रक्खा और तैयारी शुरू कर दी। हज़रत हातिब ने एक ख़त मक्का जाने वाली एक औरत को दे दिया जिसमें इस हमले की ख़बर दी गई थी और यह सोचा कि जीत तो हर सूरत में मुसलमानों ही की होगी इस ख़बर से दुशमन ख़ुश होकर मेरे घर वालों को न सताएंगे और यह

फ़िक्र इसलिए हुई कि मक्के में उनके ख़ानदान के लोग नहीं थे वो यमन के रहने वाले थे। उन्होंने यह काम मुसलमानों को नुक़सान पहुंचाने के इरादे से नहीं किया था। अल्लाह तआ़ला ने वही से इस बात की ख़बर हुज़ूर को देदी और हुज़ूर ने हज़रत अली को भेजा वो ख़त रास्ते ही से उस औरत से छीन लाए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सारी बात जान कर हज़रत हातिब को इस ग़लती पर मुआफ़ कर दिया। उस मौक़े पर ये आयतें उतरीं:-

ऐ ईमान वालो तुम मेरे दुशमनों और अपने दुशमनों को दोस्त मत बनाओ कि उनसे दोस्ती दिखाने लगो (यानी चाहे दिल से दोस्ती न हो मगर ऐसा दोस्ताना बरताव भी मत करो) **हालांकि तुम्हारे पास जो सच्चा दीन आ चुका है वो उस का इनकार करते हैं** (जिससे उन का अल्लाह का दुशमन होना मालूम हुआ), **रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को और तुम को इस वजह से कि तुम अपने रब अल्लाह पर ईमान ले आए शहर** (मक्का) **से निकाल चुके** (हैं तो वो तुम्हारे भी दुशमन) **हैं,** (तो ऐसे लोगों से दोस्ती मत करो जो सिर्फ़ अल्लाह ही के दुशमन नहीं बल्कि तुम्हारे भी दुशमन हैं) **अगर तुम मेरे रास्ते में जिहाद करने के लिए और मेरी रज़ामन्दी ढूंडने के लिए** (अपने घरों से) **निकले हो, तुम उनसे चुपके-चुपके दोस्ती की बातें करते हो** (यानी एक तो दोस्ती ही बुरी चीज़ है फिर छुप कर ख़त भेजना यह और ज़्यादा बुरा है) **हालांकि मैं सब चीज़ों को जानता हूं तुम जो कुछ छुपाकर करते हो और जो कुछ ऐलानिया करते हो** (इसलिए भी ऐसी बातों से रूकना चाहिए), **और** (आगे इस बात पर धमकी है कि) **जो आदमी तुम में ऐसा** (काम) **करेगा वो सीधे रास्ते से बहक गया(01)** (और वो तुम्हारे ऐसे सख़्त दुशमन हैं कि) **अगर तुम उनके हाथ आजाओ तो** (फ़ौरन) **तुम से दुशमनी का बरताव करने लगें और तुम पर बुराई के साथ हाथ और ज़बान चलाने लगें** (यह तो दुनिया का नुक़सान है) **और** (दीनी नुक़सान यह है कि) **वो चाहते हैं कि तुम भी काफ़िर** (ही) **हो जाओ(02)** (और अगर तुम को दोस्ती के बारे में अपने घर वालों का ध्यान हो तो ख़ूब समझ लो कि) **तुम्हारे रिशतेदार और औलाद क़ियामत के दिन तुम्हारे** (कुछ) **काम न आएंगे अल्लाह** (ही) **तुम्हारे बीच फ़ैसला करेगा, और अल्लाह तुम्हारे कामों को ख़ूब देखता** (है बस अगर तुम्हारे काम सज़ा के क़ाबिल होंगे तो उस सज़ा से औलाद और रिशतेदार बचा न सकेंगे फिर उनके लिए अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ करना बहुत बुरा काम) **है(03)** (और) **तुम्हारे लिए इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **और उनके साथियों में अच्छा नूमना है** (यानी इस बारे में काफ़िरों से ऐसा बरताव करना चाहिए जैसा उन्होंने किया) **जब कि उन**

सब ने अपनी क़ौम (के लोगों) **से कह दिया कि हम तुम से और जिन को तुम अल्लाह के सिवा माबूद समझते हो उन से कोई वास्ता नहीं रखते, हम तुम्हारा** (यानी तुम्हारे दीन का) **इनकार करते हैं और हमारे और तुम्हारे बीच सदा के लिए दुशमनी और बैर पैदा हो गया है जब तक तुम सिर्फ़ एक अल्लाह पर ईमान न लाओ** (बस उन्होंने काफ़िरों से वास्ता ख़त्म कर दिया) **लेकिन इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **की इतनी बात तो अपने बाप से हुई थी कि मैं आप के लिए अल्लाह से मुआफ़ी की दुआ ज़रूर मांगूंगा और तुम्हारे लिए** (इससे ज़्यादा) **कोई बात अल्लाह के सामने मेरे बस में** (नहीं कि दुआ कुबूल करालूं या ईमान न लाने के बावजूद तुम को अज़ाब से बचालूं यहां मुआफ़ी की दुआ का मतलब यह है कि यह दुआ करना कि वो ईमान लाकर मुआफ़ी के हक़दार बन जाएं जिस की सब को इजाज़त है जो असल में वास्ता ख़त्म करने के ख़िलाफ़) **नहीं,** (और इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ की कि) **या रब हमारे हम** (काफ़िरों से वास्ता ख़त्म करने के ऐलान के बारे में) **आप पर भरोसा करते हैं और** (आप ही हमारी सभी मुश्किलों में मदद और काफ़िरों के सताने से हिफ़ाज़त करेंगे और ईमान लाने में) **आप ही की तरफ़ लौ लगाते हैं और** (ऐतक़ाद रखते हैं कि) **आप ही की तरफ़** (सब को) **लौटाना है(04)** (और) **या रब हमारे हम को काफ़िरों के आज़माने का सामान न बना** (यानी हम पर वो ज़ुल्म न करने पाएं) **और हमारे गुनाह मुआफ़ कर दीजिए या रब हमारे बेशक आप ज़बरदस्त** (कुदरत वाले) **हिकमत वाले हैं(05) बेशक उन लोगों में** (यानी इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनके मानने वालों में) **तुम्हारे लिए यानी ऐसे आदमी के लिए अच्छा नमूना है जो अल्लाह** (के सामने जाने) **का और क़ियामत के दिन** (के आने) **का ऐतक़ाद रखता हो, और जो आदमी** (इस हुक्म से) **मुंह फेरेगा सो** (उसी का नुक़सान होगा, क्योंकि) **अल्लाह तआला** (तो) **बिल्कुल बेपरवा** (यानी उसको किसी की ज़रूरत नहीं और) **सब तारीफ़ों वाला है(06)।**

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ؕ وَ اللّٰهُ قَدِيْرٌ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٧ لَا
يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَ لَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَ تُقْسِطُوْٓا
اِلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٨ اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَ اَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ
دِيَارِكُمْ وَ ظٰهَرُوْا عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَ مَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٩

आयत नं० 07 से 09

(और उनसे दुशमनी की ख़बर से मुसलमानों को कुछ दुख हो सकता था इसलिए ख़ुशख़बरी है कि) **अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है** (यानी उधर से वादा है) **कि तुम में और उन लोगों में जिनसे तुम्हारी दुशमनी है दोस्ती पैदा करा दे** (चाहे कुछ ही से सही यानी उन को मुसलमान करदे जिससे दुशमनी दोस्ती में बदल जाए), **और** (इसको कुछ मुश्किल न समझो क्योंकि) **अल्लाह बड़ी क़ुदरत वाला है** (जैसा कि मक्के की जीत के दिन बहुत आदमी ख़ुशी से मुसलमान हो गये), **और** (अब तक जो किसी से इस हुक्म के ख़िलाफ़ ग़लती हो गई जिससे वो अब तौबा कर चुका है तो) **अल्लाह तआ़ला** (उसके लिए) **बख़्शने वाला रहमत करने वाला है(07)** (और) **अल्लाह तआ़ला तुम को उन लोगों के साथ अहसान और इन्साफ़ का बरताव करने से मना नहीं करता जो तुम से दीन के बारे में नहीं लड़े और तुम को तुम्हारे घरों से नहीं निकाला, बेशक अल्लाह तआ़ला इन्साफ़ का बरताव करने वालों से मुहब्बत रखते हैं(08)** (अलबत्ता) **सिर्फ़ उन लोगों के साथ दोस्ती** (यानी भलाई व अहसान) **करने से अल्लाह तआ़ला तुम को मना करता है जो तुम से दीन के बारे में लड़े हों और तुम को तुम्हारे घरों से निकाला हो और** (अगर निकाला न भी हो लेकिन) **तुम्हारे निकालने में** (निकालने वालों की) **मदद की हो और जो लोग ऐसों से दोस्ती** (का बरताव यानी भलाई और अहसान का बरताव) **करेंगे तो वो लोग गुनाहगार होंगे(09)**

नोटः- जिन काफ़िरों से मुसलमानों को किसी नुक़सान का ख़तरा हो उन से दोस्ती जाइज़ नहीं। जिनसे ख़तरा न हो उनके साथ अहसान व भलाई का बरताव करना जाइज़ है और इन्साफ़ हर हाल में हर आदमी के लिए ज़रूरी और वाजिब है।

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ
مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ؕ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَ لَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ؕ وَ اٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا ؕ وَ لَا
جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ؕ وَ لَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَ سْئَلُوْا مَآ اَنْفَقْتُمْ وَ
لْيَسْئَلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ؕ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝١٠ وَ اِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ
اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ
مُؤْمِنُوْنَ ۝١١ يَآيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْئًا وَّ لَا يَسْرِقْنَ وَ لَا

يَزْنِيْنَ وَ لَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَ لَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَ اَرْجُلِهِنَّ وَ لَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ
مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَ اسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ
اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوْا مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ﴿١٣﴾ ع

आयत नं० 10 से 13

नोटः- सुलह हुदैबिया के मौक़े पर जो शर्तें रक्खी गईं थीं उनमें एक शर्त यह भी थी कि जो मर्द काफ़िरों में से मुसलमानों की तरफ़ चला जाए उस को वापस किया जाए बस कुछ मुसलमान मर्द वापस कर दिये गये फिर कुछ औरतें मुसलमान होकर आईं उनके रिश्तेदारों ने उनकी वापसी की मांग की इस पर ये आयतें उतरीं जिसमें औरतों को वापस करने से मना कर दिया गया और उनके मुसलमान होने का इम्तिहान करने को कहा गयाः-

ऐ ईमान वालो जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें (काफ़िरों के मुल्क से) **हिजरत करके आएं तो तुम उन** (के मुसलमान होने) **का इम्तिहान कर लिया करो** (जिसका तरीक़ा आगे आता है, और इस इम्तिहान में ज़ाहिरी इम्तिहान को काफ़ी समझो क्योंकि) **उनके** (असली) **ईमान को** (तो) **अल्लाह ही बेहतर जानता है** (तुम तो इसको जान ही नहीं सकते)**, बस अगर उन को** (इस इम्तिहान की रू से) **मुसलमान समझो तो उन को काफ़िरों की तरफ़ वापस मत करो,** (क्योंकि) **न तो वो औरतें उन काफ़िरों के लिए हलाल हैं और न वो काफ़िर उन औरतों के लिए हलाल हैं** (क्योंकि मुसलमान औरत का निकाह काफ़िर मर्द से बिल्कुल नहीं रहता)**, और उन काफ़िरों ने जो कुछ** (महर की सूरत में उन औरतों पर) **ख़र्च किया हो वो उनको अदा कर दो, और तुम को उन औरतों से निकाह करने में कुछ गुनाह न होगा जब कि तुम उन के महर उन को देदो, और** (ऐ मुसलमानों) **तुम काफ़िर औरतों के रिशतों को बाक़ी न रक्खो** (यानी जो तुम्हारी बीवियां काफ़िरों की तरफ़ कुफ़्र की हालत में रह गईं उन का निकाह तुम से ख़त्म हो गया) **और** (इस सूरत में) **जो कुछ तुम ने** (उन औरतों के महर में) **ख़र्च किया हो** (उन काफ़िरों से) **मांग लो और** (इसी तरह) **जो कुछ उन काफ़िरों ने** (महर की सूरत में) **ख़र्च किया हो वो तुम से मांग लें, यह** (जो कुछ कहा गया) **अल्लाह का हुक्म है** (इसको मानो)**, वो तुम्हारे बीच में** (ऐसा ही ठीक) **फ़ैसला करता है, और अल्लाह बड़ा जानने वाला** (और) **हिकमत वाला है(10) और अगर तुम्हारी बीवियों में से कोई बीवी काफ़िरों में रह जाने से** (बिल्कुल ही) **तुम्हारे हाथ न आए**

(यानी न वो मिले और न उसके महर का बदला मिले और) **फिर** (काफ़िरों को महर देने की) **तुम्हारी नौबत आए** (यानी तुम्हारे ज़िम्मे किसी काफ़िर का महर देना हो) **तो** (तुम वो महर उन काफ़िरों को न दो बल्कि) **जिन** (मुसलमानों) **की बीवियां हाथ से निकल गईं** (जिन का अभी ज़िक्र हुआ तो) **जितना** (महर) **उन्होंने** (उन बीवियों पर) **ख़र्च किया था उस के बराबर** (उस देनदारी की रक़म में से) **तुम उन को देदो, और डरते रहो अल्लाह से जिस पर तुम ईमान रखते हो**(11) (और आगे इम्तिहान का तरीक़ा बताते हैं कि) **ऐ पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **जब मुसलमान औरतें आप के पास इन बातों पर बैत करने के लिए आएं कि वो अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न करेंगी और न चोरी करेंगी और न बदकारी करेंगी और न अपने बच्चों को क़त्ल करेंगी और न कोई बदनामी की औलाद लाएंगी जिस को अपने हाथों और अपने पैरों के बीच** (अपने शौहर से जनी हुई होने का दावा करके) **बनालें** (जैसे जहालत के ज़माने में किसी का बच्चा उठाकर अपना बता देती थी या और किसी से बदकारी की और उससे होने वाले बच्चे को शौहर का बता दिया) **और शरीअत की बातों में वो आप के ख़िलाफ़ न करेंगी** (इसमें शरीअत के सब हुक्म आगये बस अगर वो औरतें इन शर्तों को मानलें जिनका ऐतक़ाद ईमान की शर्त है और पाबन्दी ईमान का कमाल दर्जा है) **तो आप उनको बैत कर लिया कीजिए और उनके लिए अल्लाह से** (पिछले गुनाहों की) **मुआफ़ी मांगिए, बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला बहुत महरबान है**(12) **ऐ ईमान वालो उन लोगों से** (भी) **दोस्ती मत करो जिन पर अल्लाह तआला ने ग़ज़ब किया है** (यानी जिन पर सख़्त नाराज़ हुआ मुराद यहूदी लोग हैं) **कि वो आख़रत** (की भलाई व सवाब) **से ऐसे नाउम्मीद हो गये हैं जैसे काफ़िर लोग जो क़ब्रों में** (दफ़्न) **हैं** (आख़रत के सवाब से) **ना उम्मीद** (हैं क्योंकि यहूदी जिस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सच्चा नबी होना जानते थे मगर हसद की वजह से नहीं मानते थे इसी तरह वो यह भी जानते थे कि रसूल को न मानने पर बख़्शिश नहीं होगी जैसे काफ़िर मरने के बाद अपना अन्जाम देख लेते) **हैं**(13)।

नोटः- हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि औरतों की यह बैत सिर्फ़ ज़बानी हुई। मर्दों की बैत में जो हाथ पर हाथ रखने का दस्तूर है औरतों की बैत में ऐसा नहीं किया गया। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक हाथ ने कभी किसी ग़ैर महरम के हाथ को नहीं छुआ। (मज़हरी)

61-सूरत-सफ़्फ़

इस मदनी सूरत में ‘2’ रूकू और ‘14’ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا
تَفْعَلُوْنَ ۝٢ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝٣ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا
كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝٤ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ
اِلَيْكُمْ ۭ فَلَمَّا زَاغُوْۤا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥ وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ
يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ
بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ۭ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٦ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰۤى اِلَى الْاِسْلَامِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧ يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ
اللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨ هُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ
كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٩

आयत नं० 01 से 09

सब चीज़ें अल्लाह की तस्बीह करती हैं जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं और वो ही ज़बरदस्त (कुदरत वाला और) **हिकमत वाला** (है बस जो ऐसी शान वाला हो उस की ताबेदारी हर हुक्म में ज़रूरी) **है(01)** (एक बार कुछ मुसलमानों ने आपस में बाप चीत की कि अगर हम को पता चल जाए कि अल्लाह को कौन सा नेक काम ज़्यादा पसन्द है तो हम उसी काम को करें जब कि इससे पहले जंग उहद में कुछ लोग जिहाद से भाग चुके थे इस पर कहा गया कि) **ऐ ईमान वालो ऐसी बात क्यों कहते हो जो करते नहीं हो(02) अल्लाह के नज़दीक यह बात बहुत नाराज़ी की है कि ऐसी बात कहो जो करो नहीं(03) अल्लाह तआला तो उन लोगों को**

(ख़ास कर) **पसन्द करता है जो उसके रास्ते में इस तरह मिल कर लड़ते हैं जैसे वो एक इमारत है जिसमें सीसा पिलाया गया** (हो यानी जिस तरह यह इमारत मज़बूत होती है कि टूटती नहीं इसी तरह वो जिहाद करने वाले दुशमन के मुक़ाबिले से हटते नहीं मतलब यह कि अल्लाह के नज़दीक सबसे प्यारा काम तो यह जिहाद है फिर वो भारी क्यों लगा कि जंगे उहद में भाग गये थे बस ऐसी दावे की बात क्यों करते) **हो(04) और** (आगे फ़सादी काफ़िरों से जिहाद की वजह बयान करते हैं कि वो वक़्त भी याद कीजिए) **जब कि मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम** (के लोगों) **मुझ को क्यों तकलीफ़ पहुंचाते हो हालांकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे पास अल्लाह का भेजा हुआ** (पैग़म्बर होकर) **आया हूं** (वो तकलीफ़ सरकशी और मुख़ालफ़त है), **फिर जब** (इस समझाने पर भी) **वो लोग टेढ़े ही रहे** (और राह पर न आए) **तो अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों को और** (ज़्यादा) **टेढ़ा कर दिया** (यानी बुराई में बढ़ते चले गये भलाई की तौफ़ीक़ नहीं हुई), **और अल्लाह तआ़ला** (का दस्तूर है कि वो) **ऐसे नाफ़रमानों को हिदायत** (की तौफ़ीक़) **नहीं देता** (इसी तरह ये लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ें पहुंचाते हैं इसलिए उनका टेढ़ापन ज़्यादा होता जाता है सुधार की उम्मीद नहीं रही बस उनका फ़साद मिटाने के लिए जिहाद का हुक्म दिया गया)(05) **और** (इसी तरह वो वक़्त भी याद कीजिए) **जब कि मरयम के बेटे ईसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल मैं तुम्हारे पास अल्लाह का भेजा हुआ** (पैग़म्बर होकर) **आया हूं कि मुझसे पहले जो तौरेत** (आ चुकी) **है मैं उस की तस्दीक़ करने वाला हूं और मेरे बाद जो एक रसूल आने वाले हैं जिनका** (मुबारक) **नाम अहमद होगा मैं उनकी ख़ुशख़बरी देने वाला हूं, फिर जब** (ये सब बातें बता कर अपनी पैग़म्बरी के सबूत के लिए) **वो** (ईसा अलैहिस्सलाम) **उन लोगों के पास खुली निशानियां लाए तो वो लोग** (उन मोजिज़ों के बारे में) **कहने लगे कि यह खुला जादू** (है और जादू बता कर पैग़म्बरी को झुटलाया इसी तरह ईसा अलैहिस्सलाम के बाद फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैग़म्बरी के ज़माने में मौजूद काफ़िरों ने आप को झुटलाया और मुख़ालफ़त की और यह बड़ा ज़ुल्म है बस इस ज़ुल्म को मिटाने के लिए जिहाद का हुक्म दिया गया) **है(06) और** (सच में) **उस आदमी से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह पर झूट बान्धे जब कि उसे इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता हो, और अल्लाह ऐसे ज़ालिम लोगों को हिदायत** (की तौफ़ीक़) **नहीं दिया करता** (है अल्लाह पर झूट बान्धना यह है कि पैग़म्बरी को झुटलाना, जो चीज़ अल्लाह की तरफ़ से हो उस का इनकार करना और जो चीज़ अल्लाह की तरफ़ से न हो उस को अल्लाह की तरफ़ से बताना दोनों बातें अल्लाह पर झूट बान्धना) **है(07)**

ये लोग यह चाहते हैं कि अल्लाह के नूर (यानी दीन इस्लाम) **को अपने मुंह से** (फूंक मार कर) **बुझा दें हालांकि अल्लाह अपने** (इस) **नूर को कमाल तक पहुंचा कर रहेगा चाहे काफ़िर लोग कैसा ही बुरा मानें**(08) **वो अल्लाह ऐसा है जिसने** (इसी नूर को पूरा करने के लिए) **अपने रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को हिदायत** (का सामान यानी कुरआन) **और सच्चा दीन** (यानी इस्लाम) **देकर** (दुनिया में) **भेजा है ताकि इस** (दीन) **को सभी** (दूसरे) **दीनों से ऊपर कर दे चाहे मुशरिक लोग कैसा ही बुरा मानें**(09)।

मसअलाः- ऐसे काम का दावा करना जिस के करने का इरादा ही न हो और उसको करना ही न हो तो यह बड़ा गुनाह और अल्लाह की सख़्त नाराज़ी की वजह है। और जहां यह सूरत न हो बल्कि इरादा करने का हो वहां भी अपनी ताक़त व हिम्मत पर भरोसा करके दावा करना मना और मकरूह है।

नोटः- आख़री नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम मुहम्मद भी था और अहमद भी और भी बहुत से नाम थे मगर इन्जील में आप का नाम अहमद बताया गया। इस की वजह यह भी हो सकती है कि अहमद नाम रखने का दस्तूर नहीं था वो आप की ज़ात ही के साथ ख़ास था।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝١٠ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ
تُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَ اَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝١١ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ
وَ يُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَ مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٢ وَ
اُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ فَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَ بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٣ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا
قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ
مِّنْ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ وَ كَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ۝١٤

आयत नं० 10 से 14

(आगे जिहाद के आख़रत व दुनिया में मिलने वाले फल का बयान है कि) **ऐ ईमान वालो क्या मैं तुम को ऐसा कारोबार बता दूं जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचा ले**(10) (वो यह है कि) **तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बहुत ही बेहतर है अगर तुम कुछ समझ रखते हो**(11) (जब ऐसा करोगे तो) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाह मुआफ़ करेगा और तुम को** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी और ऐसे अच्छे मकानों में** (दाख़िल करेगा) **जो सदा रहने के बाग़ों में** (बने) **होंगे, यह बड़ी कामयाबी है**(12) **और** (इस आख़रत के असली फल के सिवा) **एक और फल** (दुनिया का) **भी है कि तुम उस को** (भी ख़ास कर) **पसन्द करते हो,** (यानी) **अल्लाह की तरफ़ से मदद और जल्दी मिलने वाली जीत, और** (ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप** (इन सभी बातों की) **ईमान वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए** (जैसा कि मुसलमानों की होने वाली जीतों से ख़ुशख़बरी पूरी हुई)(13) **ऐ ईमान वालो तुम अल्लाह के** (दीन के) **मददगार हो जाओ** (उस तरीक़े से जो तुम्हारी शरीअत में है यानी जिहाद) **जैसा कि** (ईसा अलैहिस्सलाम के साथी यानी हवारीयीन अपनी शरीअत की रू से दीन के मददगार हुए थे जब कि बहुत से लोग ईसा अलैहिस्सलाम के दुशमन और मुख़ालिफ़ थे और जब कि) **मरयम के बेटे ईसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (उन) **हवारीयीन से कहा कि अल्लाह के वास्ते मेरा कौन मददगार होता है वो हवारी बोले हम अल्लाह** (के दीन) **के मददगार हैं** (जैसा कि उन्होंने दीन की यह मदद की कि उसके फैलाने में कोशिश की) **सो** (उस कोशिश के बाद) **बनी इस्राईल में से कुछ लोग ईमान लाए और कुछ लोग काफ़िर ही रहे,** (फिर उनमें आपस में टकराव हुआ) **तो हमने ईमान वालों की उन के दुशमनों के मुक़ाबिले में हिमायत की तो वो कामयाब हो गये** (इसी तरह तुम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन के लिए कोशिश करो और जिहाद करो)(14)।

नोटः- सहाबा किराम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऐसी मदद और दीन की ऐसी ख़िदमत की कि उसकी मिसाल पहली उम्मतों में नहीं मिलती। उन्होंने दीन के लिए सारी दुनिया से दुशमनी ख़रीदी उन की तकलीफ़ें सहीं। अपनी जान व माल और औलाद को दीन पर क़ुरबान किया और अन्जामकार अल्लाह तआ़ला ने अपनी मदद भेजी। और सब दुशमनों पर उनको हावी कर दिया और दुनिया की हुकूमत दी।

62-सूरत-जुमआ

इस मदनी सूरत में ‘2’ रूकू और ‘11’ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝١ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ
رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَ يُزَكِّيْهِمْ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ ۗ وَ اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ۝٢ وَّ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٣ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ
اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٤ مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ؕ بِئْسَ
مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥ قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا اِنْ
زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٦ وَ لَا يَتَمَنَّوْنَهٗۤ اَبَدًۢا بِمَا
قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٧ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ
اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٨

आयत नं० 01 से 08

सब चीज़ें जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं अल्लाह की तस्बीह करती हैं जो कि बादशाह है (ऐबों से) **पाक है ज़बरदस्त** (क़ुदरत और) **हिकमत वाला है(01) वो ही जिसने** (अरब के) **अनपढ़ लोगों में उन्हीं** (की क़ौम यानी अरब) **में से एक पैग़म्बर भेजा जो उनको अल्लाह की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं और उनको** (ग़लत अक़ीदों और बुरी आदतों से) **पाक करते हैं और उनको किताब और अक़्लमन्दी** (की बातें) **सिखाते हैं** (जिसमें सब दीन के ज़रूरी हुक्म आ गये), **और ये लोग** (यानी इनमें ज़्यादा तर आप के आने से) **पहले से खुली गुमराही में थे** (यानी शिर्क व कुफ़्र)**(02) और** (इन मौजूद लोगों के सिवा) **दूसरों के लिए भी** (आप को भेजा) **जो** (इस्लाम लाकर) **उनमें से होने वाले हैं लेकिन अभी इनमें शामिल नहीं हुए** (चाहे

इस वजह से कि अभी इस्लाम नहीं लाए या इस वजह से कि अभी पैदा ही नहीं हुए इसमें सारी उम्मत के लोग क़ियामत तक के आगये अरब वाले हों या दूसरे), **और वो ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **हिकमत वाला** (है कि अपनी क़ुदरत और हिकमत से ऐसा नबी भेजा) **है(03)** (और) **यह** (रसूल के वास्ते से गुमराही से निकल कर किताब व हिकमत व हिदायत की तरफ़ आना) **अल्लाह की महरबानी है वो** (यह महरबानी) **जिस को चाहता है** (उस पर कर) **देता है, और अल्लाह बड़ा महरबान है(04)** (और आगे झुटलाने वाले यहूदियों के आलिमों के बारे में बयान है कि) **जिन लोगों को तौरेत** (के हुक्मों) **पर चलने को कहा गया फिर वो उस पर नहीं चले उन की हालत उस गधे की सी है जो बहुत सी किताबें लादे हुए** (है मगर उन किताबों के नफ़े से महरूम है बस उन लोगों ने पढ़ने में महनत बहुत की मगर अमल करके नफ़ा न उठाया और गधे की मिसाल इसलिए दी गई कि वो जानवरों में बेवक़ूफ़ मशहूर) **है, उन लोगों की बुरी हालत है जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुटलाया** (जैसे ये यहूदी हैं), **और अल्लाह तआ़ला ऐसे ज़ालिमों को हिदायत** (की तौफ़ीक़) **नहीं दिया करता** (है क्योंकि जान बूझकर मुख़ालफ़त करते हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का भी तौरेत में हुक्म है बस ईमान न लाना तौरेत के हुक्म को छोड़ना) **है(05) आप** (उनसे) **कह दीजिए कि ऐ यहूदियों अगर तुम्हारा यह दावा है कि सारे लोगों को छोड़ कर तुम ही अल्लाह को पसन्द** (और प्यारे) **हो तो तुम** (इस की तस्दीक़ के लिए ज़रा) **मौत की तमन्ना करो** (यानी तमन्ना करके दिखला दो) **अगर तुम** (इस दावे में) **सच्चे हो(06) और** (हम साथ ही यह कह देते हैं कि) **वो** (दावा करने वाले लोग) **कभी उस** (मौत) **की तमन्ना न करेंगे उन** (कुफ़्र के) **कामों** (की सज़ा के डर) **की वजह से जो अपने हाथों समेटे हैं, और अल्लाह तआ़ला इन ज़ालिमों** (के हाल) **को अच्छी तरह जानता है** (वक़्त पर सज़ा देगा)**(07) आप** (उनसे यह भी) **कह दीजिए कि जिस मौत से तुम भागते हो** (और सज़ा के डर से उस की तमन्ना नहीं करते हो) **वो** (मौत एक दिन) **तुम को आ पकड़ेगी फिर तुम छुपी और खुली बातों के जानने वाले** (अल्लाह) **के पास ले जाए जाओगे फिर वो तुम को तुम्हारे सब किये हुए काम बता** (देगा और सज़ा) **देगा(08)।**

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर उस वक़्त उन (यहूदियों) में से कोई मौत की तमन्ना करता तो उसी वक़्त मर जाता । (रूह)

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَ ذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٩ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَ ابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا
لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٠ وَ اِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا ِۨانْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَ تَرَكُوْكَ قَآئِمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَ
مِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَ اللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝١١

आयत नं० 09 से 11

ऐ ईमान वालो जब जुमआ के दिन (जुमआ की) **नमाज़ के लिए अज़ान कही जाया करे तो तुम अल्लाह की याद** (यानी नमाज़ व ख़ुत्बा) **की तरफ़** (फ़ौरन) **चल दिया करो और ख़रीदना बेंचना** (इसी तरह दूसरे काम धन्धे) **छोड़ दिया करो, यह** (धन्धे छोड़ कर चल देना) **तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है अगर तुम को कुछ समझ हो** (क्योंकि इस का नफ़ा सदा रहने वाला है और कारोबार का नफ़ा ख़त्म हो जाने वाला है)(09) **फिर जब** (जुमआ की) **नमाज़ पूरी हो चुके** (तो उस वक़्त तुम को इजाज़त है कि) **तुम ज़मीन पर चलो फिरो और अल्लाह की रोज़ी तलाश करो** (यानी उस वक़्त दुनिया के कामों के लिए चलने फिरने की इजाज़त है) **और** (उसमें भी) **अल्लाह को ख़ूब याद करते रहो** (यानी दुनिया के धन्धों में लग कर ज़रूरी इबादतों से बेपरवा मत हो जाओ) **ताकि तुम्हें कामयाबी नसीब हो(10) और** (कुछ लोगों का यह हाल है कि) **वो लोग जब किसी बिक्री या तमाशे की चीज़ को देखते हैं तो उस की तरफ़ दौड़ जाते हैं और आप को खड़ा हुआ छोड़ जाते हैं, आप कह दीजिए कि जो चीज़ अल्लाह के पास है** (यानी सवाब) **वो ऐसे धन्धे और कारोबार से बहुत बेहतर है, और** (अगर रोज़ी बढ़ाने की चाहत हो तो समझ लो कि) **अल्लाह सबसे अच्छा रोज़ी देने वाला** (है उसकी ज़रूरी इबादत में लगे रहने पर नसीब में लिखी रोज़ी देता) **है** (फिर क्यों उसके हुक्मों को छोड़ा जाए)(11)।

नोटः- जुमआ का दिन था हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ के बाद ख़ुतबा दे रहे थे उस वक़्त जुमा का ख़ुतबा नमाज़ के बाद होता था जो फिर नमाज़ से पहले कर दिया गया। तो ऐसे वक़्त में एक तिजारती क़ाफ़िला मदीना पहुंचा और बिक्री के लिए मुनादी होने लगी। और उन दिनों मदीने में ज़रूरी चीज़ों की कमी थी। कुछ मुसलमान यह सोच कर कि नमाज़ तो हो ही चुकी और ख़ुतबा सुनना ऐसा ज़रूरी नहीं समझा। बस ख़रीदारी के लिए मस्जिद से बाहर

चले गये कि कभी बाद में सामान ख़त्म हो जाए तो उस मौक़े पर ये आयतें उतरीं तब अपनी ग़लती का पता चला।

मसअलाः- जुमा की अज़ान हो जाने के बाद ख़रीदना बेंचना ही नहीं बल्कि वो सारे कारोबार व काम धन्धे मना हैं जो नमाज़ को जाने में रूकावट बनें सिर्फ़ जुमआ की तैयारी से जुड़े काम किये जा सकते हैं। और तैयारी के बाद जितनी जल्दी हो सके मस्जिद में पहुंच जाए।

63-सूरत-मुनाफ़िक़ून

इस मदनी सूरत में '2' रूकू और '11' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ۗ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ
لَكٰذِبُوْنَ ۚ ﴿۱﴾ اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۲﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿۳﴾ وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ۗ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ
لِقَوْلِهِمْ ۗ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۗ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۗ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۗ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۡ اَنّٰى
يُؤْفَكُوْنَ ﴿۴﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ
مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۵﴾ سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۗ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۶﴾ هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ۗ وَلِلّٰهِ
خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿۷﴾ يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ
الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ۗ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۸﴾ ع

आयत नं० 01 से 08

जब आप के पास ये मुनाफ़िक़ लोग आते हैं तो कहते हैं कि हम (दिल से) **गवाही देते हैं कि आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं, और यह तो अल्लाह जानता है कि आप अल्लाह के रसूल हैं** (उनकी यह बात तो झुटलाई नहीं जाती)**, और** (इसके बावजूद) **अल्लाह गवाही देता है कि ये मुनाफ़िक़ लोग** (इस कहने में) **झूटे हैं** (कि हम दिल से गवाही देते हैं क्योंकि वो गवाही सिर्फ़ ज़बानी है दिल के यक़ीन से नहीं)(01) **उन लोगों ने अपनी क़समों को** (अपनी जान व माल के बचाने के लिए) **ढाल बना रक्खा है** (क्योंकि कुफ़्र न छुपाते तो उनके साथ काफ़िरों का सा बरताव किया जाता) **फिर** (एक और बुराई यह भी है कि) **ये लोग** (दूसरों को भी) **अल्लाह की राह से**

रोकते हैं, बेशक उनके ये काम बहुत ही बुरे हैं(02) (और हमारा) **यह** (कहना कि इनके काम बहुत बुरे हैं) **इस वजह से है कि ये लोग** (शुरू में दिखाने को) **ईमान ले आए फिर** (अपने शैतानों के पास जाकर कुफ़्र की बात कह कर) **काफ़िर हो गये तो** (इस धोकेबाज़ी की वजह से) **उनके दिलों पर बन्द लगा दिया गया सो** (हक़ बात को) **नहीं समझते(03) और** (देखने में ऐसे हैं कि) **आप उनको देखें** (तो) **उनके डील डोल आप को बहुत अच्छे लगें, और** (बातों में ऐसे हैं कि) **अगर ये बातें करने लगें तो आप उनकी बात** (मीठी होने की वजह से) **सुन लें,** (लेकिन अन्दर से कोरा होने की वजह से उनकी मिसाल ऐसी है कि) **जैसे कि ये लकड़ियां हैं जो** (दीवार के) **सहारे से लगाई हुई** (खड़ी हैं कि देखने में तो लम्बी चौड़ी मोटी मगर बेजान इसी तरह ये लोग देखने में तो शानदार मगर अन्दर से बेकार) **हैं,** (और अपना भेद खुल जाने के डर से ऐसे सहमे रहते हैं कि) **हर चीख़ पुकार को** (चाहे किसी वजह से हो) **अपने ही ऊपर** (पड़ने वाली मुसीबत) **समझते हैं,** (असलीयत में) **ये ही लोग** (तुम्हारे पूरे) **दुशमन हैं इसलिए उन से होशियार रहिए** (यानी उनकी किसी बात का यक़ीन न कीजिए), **अल्लाह की मार हो उन पर कहां** (सच्चे दीन से) **फिरे चले जाते** (हैं यानी रोज़ाना दूर ही होते जाते) **हैं(04) और** (उनके घमन्ड और शरारत की यह हालत है कि) **जब उन से कहा जाता है कि** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास) **आओ तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **मुआफ़ी की दुआ करें तो वो अपना सर फेर लेते हैं आप उन को देखेंगे कि वो** (इस भलाई और रसूल की दुआ से) **घमन्ड करते हुए मुंह फेर लेते हैं(05)** (जब उनके कुफ़्र की यह हालत है तो) **उनके हक़ में दोनो बातें बराबर हैं चाहे आप उनके लिए मुआफ़ी की दुआ करें या उनके लिए मुआफ़ी की दुआ न करें, अल्लाह तआ़ला उन को हरगिज़ मुआफ़ न करेगा** (मतलब यह कि अगर वो आप के पास आते भी और आप उनकी बाहरी हालत को देख कर दुआ भी करते तब भी उनको कुछ नफ़ा न होता), **बेशक अल्लाह तआ़ला ऐसे नाफ़रमान लोगों को हिदायत** (की तौफ़ीक़) **नहीं देता(06) ये वो हैं जो कहते हैं कि जो लोग रसूलुल्लाह** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **के पास** (जमा) **हैं उन पर कुछ ख़र्च मत करो यहां तक कि ये आप ही इधर उधर भाग जाएंगे, और** (उन का यह कहना सिर्फ़ जहालत है क्योंकि) **अल्लाह ही के हैं सब ख़ज़ाने आसमानों और ज़मीन के लेकिन मुनाफ़िक़ समझते नहीं** (हैं कि रोज़ी का मदार लोगों की मदद को समझते) **हैं(07) ये** (लोग) **यह कहते हैं कि अगर हम मदीने में लौट कर जाएंगे तो इ़ज़्ज़त वाला वहां से ज़िल्लत वाले को बाहर निकाल देगा** (यानी हम उन मुसाफ़िर परदेसियों को निकाल बाहर कर देंगे) **और** (ये जो अपने को इ़ज़्ज़त

वाला मुसलमानों को ज़िल्लत वाला कहते हैं यह सिर्फ़ जहालत है बल्कि) **अल्लाह ही की है इज़्ज़त** (असल में) **और उसके रसूल की** (अल्लाह के ताल्लुक़ के वास्ते से) **और मुसलमानों की** (अल्लाह और रसूल के ताल्लुक़ के वास्ते से) **लेकिन मुनाफ़िक़ जानते नहीं**(08)।

नोटः- मदीने में अब्दुल्लाह बिन उबई नाम का एक मुनाफ़िक़ (दिखावे का मुसलमान) था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुसलमानों से दुशमनी रखता और जलता था। एक बार एक अन्सारी और मुहाजिर के बीच झगड़ा हो गया तो उसने मौक़ा पाकर आग लगाने के लिए कहा कि ये परदेसी जो तुम्हारे टुकड़ों पर पले हैं अब इनकी इतनी हिम्मत हो गई कि तुम्हारा ही मुक़ाबिला करने लगे और जब हम सफ़र से मदीने लौट जाएंगे तो इज़्ज़त वाला ज़िल्लत वाले को बाहर निकाल देगा और इनकी मदद बन्द कर दो। इन बातों की शिकायत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि० ने जो अन्सारी ही थे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से की क्योंकि उन्हें मुहाजिर सहाबा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेअदबी बहुत नागवार हुई। फिर जब उससे पूछताछ की गई तो उसने साफ़ इनकार कर दिया कि उसने ऐसी बात नहीं कही और हज़रत ज़ैद बिन अरक़म को झूटा साबित करना चाहा तो हज़रत ज़ैद की बात की सच्चाई की तस्दीक़ में ये आयतें उतरीं।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَ لَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَ مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝٩ وَ اَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْ لَاۤ اَخَّرْتَنِيْۤ اِلٰۤى
اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَ اَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١٠ وَ لَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ وَ اللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ ۝١١ ع

आयत नं० 09 से 11

ऐ ईमान वालो तुम को तुम्हारे माल और औलाद अल्लाह की याद से बेपरवा न करने पाएं (यानी दुनिया में ऐसे न खप जाना कि दीन के हुक्मों का ध्यान न रहे), **और जो ऐसा करेगा ऐसे लोग नाकाम रहने वाले हैं** (क्योंकि दुनिया का नफ़ा तो ख़त्म हो जाएगा और आख़रत का नुक़सान सदा के लिए रह जाएगा)(09) **और हम ने जो कुछ तुम को दिया है उसमें से** (नेक

कामों में) **इससे पहले-पहले ख़र्च कर लो कि तुम में से किसी के पास मौत आजाए फिर वो** (पछताकर तमन्ना करते हुए) **कहने लगे कि या रब मेरे मुझको और थोड़े दिनों की मुहलत क्यों न दी कि मैं ख़ैर ख़ैरात कर लेता और नेक काम करने वालों में शामिल हो जाता**(10) **और** (उन की यह तमन्ना बेकार है क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला किसी आदमी को जब कि उस** (की मौत) **का** (तय) **वक़्त आ जाता है हरगिज़ मुहलत नहीं देता, और अल्लाह को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है** (जैसा काम होगा वैसा ही बदला पाओगे)(11)।

नोटः- हदीस में है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि कौन सा सदक़ा सबसे ज़्यादा सवाब रखता है आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐसे वक़्त अल्लाह की राह में ख़र्च करना जब कि इन्सान तन्दरूस्त हो और अपनी आइन्दा की ज़रूरतों के सामने यह डर भी हो कि माल ख़र्च कर दिया तो कहीं बाद में ख़ुद मुहताज न हो जाऊं। और फ़रमाया कि अल्लाह की राह में ख़र्च करने को उस वक़्त तक न टलाओ जब कि रूह तुम्हारे हलक़ में आजाए और मरने लगो उस वक़्त कहो कि इतना माल फ़लां को देदो इतना फ़लां काम में ख़र्च कर दो। (बुख़ारी व मुस्लिम)

64-सूरत-तग़ाबुन

इस मदनी सूरत में '2' रूकू और '18' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ‌ۚ لَـهُ الۡمُلۡكُ وَلَـهُ الۡحَمۡدُ‌ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۱﴾ هُوَ الَّذِىۡ
خَلَقَكُمۡ فَمِنۡكُمۡ كَافِرٌ وَّمِنۡكُمۡ مُّؤۡمِنٌ‌ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرٌ ﴿۲﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ بِالۡحَـقِّ وَصَوَّرَكُمۡ
فَاَحۡسَنَ صُوَرَكُمۡ‌ۚ وَاِلَيۡهِ الۡمَصِيۡرُ ﴿۳﴾ يَعۡلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَيَعۡلَمُ مَا تُسِرُّوۡنَ وَمَا تُعۡلِنُوۡنَ‌ؕ وَاللّٰهُ
عَلِيۡمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوۡرِ ﴿۴﴾ اَلَمۡ يَاۡتِكُمۡ نَبَؤُا الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ قَبۡلُ فَذَاقُوۡا وَبَالَ اَمۡرِهِمۡ وَلَهُمۡ عَذَابٌ
اَلِيۡمٌ ﴿۵﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتۡ تَّاۡتِيۡهِمۡ رُسُلُهُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ فَقَالُوۡۤا اَبَشَرٌ يَّهۡدُوۡنَنَا فَكَفَرُوۡا وَتَوَلَّوْا وَّاسۡتَغۡنَى
اللّٰهُ‌ؕ وَاللّٰهُ غَنِىٌّ حَمِيۡدٌ ﴿۶﴾ زَعَمَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اَنۡ لَّنۡ يُّبۡعَثُوۡا‌ؕ قُلۡ بَلٰى وَرَبِّىۡ لَتُبۡعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا
عَمِلۡتُمۡ‌ؕ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيۡرٌ ﴿۷﴾ فَاٰمِنُوۡا بِاللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ وَالنُّوۡرِ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلۡنَا‌ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرٌ ﴿۸﴾
يَوۡمَ يَجۡمَعُكُمۡ لِيَوۡمِ الۡجَمۡعِ‌ ذٰلِكَ يَوۡمُ التَّغَابُنِ‌ؕ وَمَنۡ يُّؤۡمِنۡۢ بِاللّٰهِ وَيَعۡمَلۡ صَالِحًا يُّكَفِّرۡ عَنۡهُ سَيِّاٰتِهٖ وَ
يُدۡخِلۡهُ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا‌ؕ ذٰلِكَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ﴿۹﴾ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَكَذَّبُوۡا
بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا‌ؕ وَبِئۡسَ الۡمَصِيۡرُ ﴿۱۰﴾

आयत नं० 01 से 10

सब चीज़ें जो कुछ कि आसमानों में हैं और जो कुछ कि ज़मीन में हैं अल्लाह की तस्बीह करती हैं, उसी की बादशाही है और वो ही तारीफ़ के लाइक़ है, और वो ही हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखता है(01) वो ही है जिसने तुम को पैदा किया (इसलिए चाहिए तो यह था कि सब ईमान लाते) **फिर** (इसके बावजूद भी) **तुम में कुछ काफ़िर हैं और कुछ मोमिन हैं, और अल्लाह तुम्हारे** (ईमान व कुफ़्र के) **कामों को देख रहा है** (बस हर एक के हिसाब से बदला देगा)**(02) उसी ने आसमानों और ज़मीन को ठीक-ठीक पैदा किया** (यानी उनमें फ़ाइदे हिकमतें

रक्खीं) **और तुम्हारी सूरतें बनाईं सो कैसी अच्छी सूरतें बनाईं** (क्योंकि इन्सानी जिस्म जैसा किसी जानदार के जिस्म का नक़्शा नहीं) **और उसी के पास** (सब को) **लौटना है(03)** (और) **वो सब चीज़ों को जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं और जो कुछ तुम छुप कर करते हो और जो कुछ ऐलानिया करते हो उस को भी जानता है, और अल्लाह तआला दिलों तक की बातों को जानने वाला है** (इसलिए चाहिए कि तुम उसी की इबादत करो)**(04) क्या तुम को उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जिन्होंने** (तुम से पहले) **कुफ़्र किया, फिर उन्होंने अपने** (उन) **कामों का अज़ाब** (दुनिया में भी) **चक्खा और** (इसके सिवा आख़रत में भी) **उन को दर्दनाक अज़ाब होने वाला है(05) यह** (दुनिया व आख़रत का अज़ाब) **इस लिए है कि उन लोगों के पास उनके पैग़म्बर साफ़ दलीलें लेकर आए तो उन लोगों ने** (उन पैग़म्बरों के बारे में) **कहा कि क्या** (हम जैसे) **आदमी हम को हिदायत करेंगे** (यानी इन्सान कहीं पैग़म्बर हो सकता है), **बस उन्होंने कुफ़्र किया और मुंह फेरा और अल्लाह ने** (भी उनकी कुछ) **परवाह न की** (बल्कि अज़ाब भेज दिया), **और अल्लाह** (सबसे) **बेपरवाह** (और) **तमाम तारीफ़ों वाला** (है उस को न किसी के गुनाह से नुक़सान और न किसी की ताबेदारी से नफ़ा ख़ुद ताबेदार और गुनाहगार का ही नफ़ा नुक़सान) **है(06)** (और) **ये काफ़िर** (आख़रत के अज़ाब की बातें सुन कर) **यह दावा करते हैं कि वो हरगिज़ दोबारा ज़िन्दा न किये जाएंगे, आप कह दीजिए क्यों नहीं मेरे रब की क़सम ज़रूर दोबारा ज़िन्दा किये जाओगे फिर जो कुछ तुमने किया है तुम सब को बता दिया जाएगा** (और उस पर सज़ा दी जाएगी), **और यह** (दोबारा ज़िन्दा करना और बदला देना) **अल्लाह** (कुदरत वाले) **को बिल्कुल आसान है(07) इसलिए** (तुम को चाहिए कि) **तुम अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस के नूर** (यानी कुरआन) **पर जो कि हमने उतारा है ईमान लाओ, और अल्लाह तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर रखता है(08)** (और उस दिन को याद करो) **जिस दिन कि तुम सब को उस जमा होने के दिन में जमा करेगा ये ही दिन है नफ़े नुक़सान** (के खुल जाने) **का** (यानी मुसलमानों का नफ़ा और काफ़िरों का नुक़सान उस दिन नज़र आजाएगा), **और जो आदमी अल्लाह पर ईमान रखता होगा और नेक काम करता होगा अल्लाह उसके गुनाह दूर कर देगा और उसको** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी जिन में सदा-सदा के लिए रहेंगे,** (और) **यह बड़ी कामयाबी है(09) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया होगा और हमारी आयतों को झुटलाया होगा ये लोग दोज़ख़ी हैं उसमें सदा रहेंगे, और बुरा ठिकाना है(10)।**

नोटः- एक हदीस में है कि जो आदमी किसी मजलिस में बैठा और पूरी मजलिस में अल्लाह का ज़िक्र न किया तो यह मजलिस क़ियामत के दिन उसके लिए पछतावा बनेगी।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١١﴾ وَ اَطِيْعُوا
اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٢﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَ اَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَ اِنْ
تَعْفُوْا وَ تَصْفَحُوْا وَ تَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَ اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ
عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَ اسْمَعُوْا وَ اَطِيْعُوْا وَ اَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ؕ وَ مَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٧﴾
عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾

आयत नं० 11 से 18

कोई मुसीबत अल्लाह के हुक्म के बिना नहीं आती (तो यह समझ कर सब्र करना और राज़ी रहना चाहिए), **और जो आदमी अल्लाह पर** (पूरा) **ईमान रखता है अल्लाह तआ़ला उसके दिल को** (सब्र करने और राज़ी रहने की) **राह दिखा देता है, और अल्लाह हर चीज़ को पूरी तरह जानता** (है कि किसने सब्र किया और किसने नहीं किया और हर एक को हिकमत से बदला व सज़ा देता) **है**(11) **और** (हर बात में) **अल्लाह का कहना मानो, और रसूल का कहना मानो, और अगर तुम** (ताबेदारी से) **मुंह फेरोगे तो** (याद रक्खो कि) **हमारे रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ साफ़-साफ़** (बात) **पहुंचा देना है** (जिस को वो पूरा कर चुके इसलिए उन का तो कोई नुक़सान नहीं तुम्हारा ही नुक़सान होगा)(12) **अल्लाह वो है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए**(13) **ऐ ईमान वालो तुम्हारी कुछ बीवियां और औलाद तुम्हारे** (दीन के) **दुशमन हैं** (जब कि वो अपने दुनिया के नफ़े के लिए तुम को ऐसे काम के लिए कहें जिसमें तुम्हारी आख़रत का नुक़सान हो) **इस लिए तुम उनसे** (यानी ऐसों से) **होशियार रहो** (और उनकी ऐसी बात मत मानो), **और** (अगर तुम को ऐसी मांगो पर गुस्सा आए और तुम उन पर सख़्ती करने लगो और वो ग़लती मानलें और तौबा करें तो) **तुम** (उस वक़्त उनकी वो ख़ता) **मुआफ़**

कर दो (यानी सज़ा न दो) **और टाल जाओ** (यानी ज़्यादा बुरा भला मत कहो) **और बख़्श दो** (यानी उसको दिल से और ज़बान से भुला दो), **तो अल्लाह तआ़ला** (तुम्हारे गुनाहों का) **बख़्शने वाला** (और तुम्हारे हाल पर) **रहम करने वाला है** (तो तुम भी इस बात का ध्यान रक्खो)(14) **तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हारे आज़माने की चीज़ हैं** (कि देखें कौन इनमें पड़कर अल्लाह के हुक्मों को भूल जाता है और कौन याद रखता है), **और** (जो इनमें पड़ कर अल्लाह को याद रक्खेगा तो) **अल्लाह के पास** (उसके लिए) **बड़ा सवाब है**(15) **तो** (इन सब बातों को सुन कर) **जहां तक तुम से हो सके अल्लाह से डरते रहो और** (उसके हुक्मों को) **सुनो और मानो और** (ख़ास कर उसके हुक्म के मौक़ों में) **ख़र्च** (भी) **किया करो यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा, और जो आदमी अपने जी के लालच से बचा रहे ऐसे ही लोग** (आख़रत में) **कामयाब होने वाले हैं**(16) **अगर तुम अल्लाह को अच्छी तरह** (सच्चे दिल से) **क़र्ज़ दोगे** (यानी नेक कामों में ख़र्च करोगे) **तो वो उस को तुम्हारे लिए बढ़ाता चला जाएगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा, और अल्लाह बड़ा क़द्रदान** (है कि नेक काम को क़ुबूल करता) **है और बड़ा सहार वाला है** (कि गुनाह के काम पर फ़ौरन पकड़ नहीं करता)(17) **छुपे और खुले** (कामों) **का जानने वाला है** (और) **ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला और) **हिकमत वाला है**(18)।

मसअलाः- आलिमों ने ऊपर आयत से दलील लेकर बयान किया है कि घर वालों से कोई काम शरीअत के ख़िलाफ़ भी हो जाए तो उनसे बिल्कुल अलग हो जाना, नफ़रत करना और उनसे दुशमनी रखना या उनके लिए बद्दुआ करना ठीक नहीं।

नोटः- औलाद और घर वालों को इम्तिहान की चीज़ बताया गया यानी उनमें पड़ कर इन्सान बहुत सी नेकियों से रूक जाता है और बहुत से गुनाह के काम कर बैठता है। ऐसे ही माल के चक्कर में भी गुनाह कर बैठता है यहां बता दिया गया कि आख़रत के अज़ाब से ये बचा न पाएंगे।

65-सूरत-तलाक़

इस मदनी सूरत में '2' रूकू और '12' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَ اَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ
بُيُوْتِهِنَّ وَ لَا يَخْرُجْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ؕ وَ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ
ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ۝١ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ
فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّ اَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَ اَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ
يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۬ؕ وَ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝٢ وَّ يَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَ مَنْ
يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝٣ وَ الّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ
الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآىِٕكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ ۙ وَّ الّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَ اُولَاتُ الْاَحْمَالِ
اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ وَ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝٤ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗۤ اِلَيْكُمْ ؕ
وَ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَ يُعْظِمْ لَهٗۤ اَجْرًا ۝٥ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَ لَا
تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ؕ وَ اِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ
لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَ اْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَ اِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗۤ اُخْرٰى ۝٦ لِيُنْفِقْ ذُوْ
سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَ مَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّاۤ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ؕ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَاۤ اٰتٰىهَا ؕ سَيَجْعَلُ
اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ۝٧

आयत नं० 01 से 07

नोटः- एक हदीस में है कि हलाल चीज़ों में अल्लाह तआला के नज़दीक सब से ज़्यादा नापसन्द चीज़ तलाक़ है।

एक हदीस में है कि निकाह करो और तलाक़ न दो क्योंकि तलाक़ से अर्शे रहमान हिल जाता है। (क़ुरतबी)

लेकिन कुछ ज़रूरत के मौक़ों में अगर तलाक़ की इजाज़त दी है तो उसके लिए कुछ क़ाइदे क़ानून बनाकर इजाज़त दी है ताकि यह काम गुस्सा निकालने और बदला लेने का खेल न बन जाए.....

ऐ पैग़म्बर (आप लोगों से कह दीजिए कि) **जब तुम लोग** (ऐसी) **औरतों को तलाक़ देने लगो** (जिन से मिलाप हो चुका है) **तो उन को इद्दत** (के ज़माने यानी महावारी) **से पहले** (यानी पाकी में) **तलाक़ दो** (और यह बात हदीसों से साबित है कि उस पाकी में मिलाप न हो जिसमें तलाक़ देना है) **और** (तलाक़ देने के बाद) **तुम इद्दत** (के दिनों) **को याद रक्खो** (यानी मर्द व औरत सब याद रक्खें)**, और अल्लाह से डरते रहो जो तुम्हारा रब है** (यानी इस बारे में उस के हुक्मों के ख़िलाफ़ न करो जैसा यह कि तीन तलाक़ एक दम मत दो और महावारी के दिनों में तलाक़ मत दो और यह कि इद्दत के दिनों में) **उन औरतों को** (रहने के) **घरों से मत निकालो** (क्योंकि तलाक़ दी हुई औरत का रहने का हक़ वाजिब है) **और न वो औरतें खुद निकलें** (यह शरीअत का हुक्म है) **मगर हां कोई खुली बेहयाई करें तो और बात** (है यानी जैसे बदकारी या चोरी करें तो सज़ा के लिए निकाली जाएं या ज़बान दराज़ी और हर वक़्त का झगड़ा रखती हों तो उन को निकाल देना जाइज़) **है, और ये सब अल्लाह के तय किये हुए हुक्म हैं, और जो आदमी अल्लाह के हुक्मों से आगे बढ़ेगा** (जैसे उस औरत को घर से निकाल दिया) **तो उसने अपने ऊपर ज़ुल्म** (किया यानी गुनाह का काम) **किया,** (आगे बयान है कि तलाक़ रजई से आगे न बढ़ो यानी एक दम तीन तलाक़ मत दो क्योंकि) **तुम नहीं जानते शायद अल्लाह तआ़ला इस** (तलाक़ देने) **के बाद कोई नई बात** (तुम्हारे दिल में) **पैदा कर दे** (जैसे तलाक़ पर पछतावा हो तो तलाक़ रजई में इस का हल आसानी से हो सकेगा)(01) **फिर जब वो** (तलाक़ दी हुई) **औरतें** (जब कि उन को तलाक़ रजई दी हो) **अपनी इद्दत पूरी होने के नज़दीक पहुंच जाएं** (और इद्दत ख़त्म नहीं हुई) **तो** (तुम को दो इख़्तियार हैं या तो) **उन को भले तरीक़े पर** (लौटा कर अपने) **निकाह में रहने दो या भले तरीक़े से उन को आज़ाद कर दो** (मतलब यह कि तीसरी बात मत करो कि रखना भी नहीं चाहते और उनको तंग करने के लिए निकाह में लौटाओ) **और** (जो कुछ करो मेल या जुदाई उस पर) **आपस में से दो भरोसेमन्द लोगों को गवाह कर लो** (ताकि उलझाव न रहे न मर्द झूट कह सके मैं लौटा चुका था

और न औरत इनकार कर सके) **और** (ऐ गवाहो अगर गवाही की ज़रूरत पड़े तो) **तुम अल्लाह के वास्ते ठीक-ठीक गवाही दो, इस बात से उस आदमी को नसीहत की जाती है जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर यक़ीन रखता हो** (मतलब यह कि ईमानदार ही नसीहत से फ़ाइदा उठाते हैं), **और** (आगे परहेज़गारी की बरकतें बताते हैं कि) **जो आदमी अल्लाह से डरता है** (और परहेज़गार रहता है तो) **अल्लाह तआ़ला उसके लिए** (मुश्किलों व नुक़सान से) **बचाव का रास्ता निकाल देता है(02) और उसको ऐसी जगह से रोज़ी पहुंचाता है जहां उस का गुमान भी नहीं होता, और जो आदमी अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह तआ़ला उस** (का काम बनाने) **के लिए काफ़ी है, बेशक अल्लाह तआ़ला अपना काम** (जिस तरह चाहता है) **पूरा करके रहता है,** (और हर काम का वक़्त भी उसके इरादे पर है क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला ने हर चीज़ का एक अन्दाज़** (अपने इल्म में) **तय कर रक्खा है(03) और तुम्हारी** (तलाक़ दी हुई) **बीवियों में से जो औरतें** (ज़्यादा उम्र होने की वजह से) **महावारी आने से नाउम्मीद हो चुकी हैं अगर तुम को** (उनकी इद्दत के हिसाब में) **शक हो तो उन की इद्दत तीन महीने है और इसी तरह जिन औरतों को** (अभी तक) **महावारी नहीं आई** (उनकी इद्दत भी तीन महीने है और जिन को महावारी आती है उनकी इद्दत तीन महावारी है)**, और जिन औरतों के पेट में बच्चा है उनकी इद्दत उस बच्चे का पैदा हो जाना है, और जो आदमी अल्लाह से डरेगा अल्लाह तआ़ला उसके हर काम में आसानी कर देगा(04) यह** (जो कुछ बयान हुआ) **अल्लाह का हुक्म है जो उसने तुम्हारे पास भेजा है, और जो आदमी** (शरीअत के हुक्मों में) **अल्लाह तआ़ला से डरेगा अल्लाह तआ़ला उसके गुनाह दूर कर देगा** (जो सबसे बड़े नुक़सान से बचाव है) **और उसको बड़ा** (नफ़ा यानी) **सवाब देगा(05)** (आगे फिर तलाक़ दी हुई औरतों के हक़ों का बयान है कि) **तुम उन** (तलाक़ दी हुई) **औरतों को अपनी हैसियत के हिसाब से रहने का मकान दो जहां तुम रहते हो** (यानी इद्दत में रहने की जगह भी तलाक़ दी हुई औरत का हक़ है अलबत्ता तलाक़ बाइन में एक मकान में अकेले में दोनों का साथ रहना जाइज़ नहीं बल्कि बीच में पर्दा रहना ज़रूरी है) **और उनको तंग करने के लिए** (रहने के बारे में) **तकलीफ़ मत पहुंचाओ** (जैसे कोई ऐसी बात करने लगे जिससे वो परीशान होकर निकल जाएं) **और अगर उन** (तलाक़ दी हुई) **औरतों के पेट में बच्चा हो तो बच्चा पैदा होने तक उन को** (खाने पीने का) **ख़र्च दो** (जब कि दूसरी औरतों के ख़र्च की हद तीन महावारी या तीन महीने हैं)**, फिर अगर** (इद्दत के बाद) **वो** (तलाक़ दी हुई) **औरतें** (जब कि पहले से बच्चे वाली हों या बच्चा ही पैदा होने से उनकी इद्दत ख़त्म हुई हो) **तुम्हारे लिए** (बच्चे को ख़र्च लेकर) **दूध पिलाएं**

तो तुम उन को (तय किया हुआ) **ख़र्च दो, और** (ख़र्च के बारे में) **आपस में भले तरीक़े से बात तय कर लिया करो** (यानी न तो औरत इतना ज़्यादा मांगे कि मर्द को दूसरी दूध पिलाने वाली तलाश करनी पड़े और न मर्द इतना कम देना चाहे कि औरत का काम न चल सके बल्कि जहां तक हो सके दोनो इसका ध्यान रक्खें कि मां ही दूध पिलाए कि बच्चे के लिए ज़्यादा अच्छा है) **और अगर तुम आपस में ज़िद करोगे तो कोई दूसरी औरत दूध पिलाएगी** (और मां बाप के लिए अच्छी बात नहीं कि पैसों के लालच में किसी और से दूध पिलवाएं)(06) **गुन्जाइश वाले को अपनी हैसियत के हिसाब से** (बच्चे पर) **ख़र्च करना चाहिए, और जिसकी आमदनी कम हो उसको चाहिए कि अल्लाह ने उस को जितना दिया है उसमें से ख़र्च** (करे यानी अमीर आदमी अपनी हैसियत के हिसाब से ख़र्च करे और ग़रीब आदमी अपनी हैसियत के हिसाब से ख़र्च) **करे,** (क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला किसी आदमी पर उससे ज़्यादा बोझ नहीं डालता जितना उस को दिया है,** (और ग़रीब आदमी ख़र्च करने से न डरे बस जान लो कि) **अल्लाह तआ़ला तंगी के बाद जल्दी आसानी भी पैदा कर देगा**(07)।

नोटः- तलाक़ तीन क़िस्म की होती है एक तो रजई यानी जब एक या दो बार तलाक़ दी हो तो इद्दत के अन्दर दोबारा उसी निकाह में लौटाने का हक़ होता है और अगर न लौटाएं और इद्दत पूरी हो जाए तो अब तलाक़ पूरी हो जाती है। दूसरी क़िस्म तलाक़ बाइन यानी जब तलाक़ रजई में न लौटाया जाए तो इद्दत पूरी हाने के बाद वो तलाक़ बाइन बन जाती है जिस में दोबारा रज़ामन्दी से नये सिरे से निकाह हो सकता है। और तीसरी क़िस्म तलाक़ मुग़ल्लज़ा जिस में गुन्जाइश बिल्कुल ख़त्म यह तीन तलाक़ के बाद होती है चाहे तलाक़ एक दम दी हों या तीन बार में दी हों।

मसअलाः- अगर दूसरी औरत से दूध पिलवाना तय हो जाए तो यह ज़रूरी है कि दूध पिलाने वाली औरत बच्चे को मां के पास रख कर दूध पिलाए। मां से अलग करके दूध पिलवाना जाइज़ नहीं क्योंकि परवरिश अपनी देख रेख में करना मां का हक़ है जो हदीस से साबित है। उससे यह हक़ छीनना जाइज़ नहीं। (मज़हरी)

हदीसः- बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "कि मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार आदमी बेहिसाब जन्नत में दाख़िल होंगे उनकी ख़ूबियों में एक यह भी है कि वो अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करने वाले होंगे"। (मज़हरी)

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ۝٨
فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ۝٩ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِي
الْاَلْبَابِ ۛ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝١٠ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ۝١١ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّ
مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝١٢

आयत नं० 08 से 12

और बहुत सी बस्तियां थी जिन्होंने अपने रब और उसके पैग़म्बरों के हुक्म (मानने) **से सरकशी की तो हम ने उन** (के कामों) **का सख़्त हिसाब किया** (मतलब यह कि उनके कुफ़्र के कामों में से किसी काम को मुआफ़ नहीं किया बल्कि सब पर सज़ा दी गई) **और हमने उन को बड़ी भारी सज़ा दी** (कि अज़ाब से हलाक किये गये)(08) **बस उन्होंने अपने कामों की सज़ा भुगती और उनके कामों का अन्जाम नुक़सान ही हुआ(09)** (यह तो दुनिया में हुआ और आख़रत में) **अल्लाह तआ़ला ने उनके लिए एक सख़्त अज़ाब तैयार कर रक्खा है** (और जब अन्जाम नाफ़रमानी का यह है) **तो ऐ समझदारो जो कि ईमान लाए हो अल्लाह से डरो** (और कहना मानो और उसी का तरीक़ा बताने के लिए) **अल्लाह ने तुम्हारे पास एक नसीहत नामा भेजा है(10)** (और वो नसीहत नामा देकर) **एक ऐसा रसूल** (भेजा) **जो तुम को अल्लाह के साफ़-साफ़ हुक्म पढ़ कर सुनाते हैं ताकि ऐसे लोगों को जो कि ईमान लाएं और अच्छे काम करें** (कुफ़्र और जहालत के) **अन्धेरों से** (ईमान और इल्म व नेक कामों के) **नूर की तरफ़ ले आएं** (मतलब यह कि जो नसीहत रसूल के वास्ते से पहुंचे उस पर चलना भी ताबेदारी है), **और** (आगे ताबेदारी यानी ईमान व नेक कामों पर वादा है कि) **जो आदमी अल्लाह पर ईमान लाएगा और अच्छे काम करेगा अल्लाह उस को** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे से नहरें बहती हैं उनमें सदा-सदा के लिए रहेंगे, बेशक अल्लाह ने** (उनको बहुत) **अच्छी रोज़ी दी(11) अल्लाह ऐसा है जिसने सात आसमान पैदा किये और उन्हीं की तरह ज़मीन** (भी सात पैदा की जैसा कि

हदीस में है कि एक ज़मीन के नीचे दूसरी ज़मीन है उसके नीचे तीसरी ज़मीन है इसी तरह सात हैं ज़मीनें) **भी,** (और) **उन सब** (आसमानों और ज़मीनों) **में** (अल्लाह तआ़ला के शरई या इन्तिज़ामी या दोनों तरह के) **हुक्म उतरते रहते हैं** (और यह इसलिए बता दिया गया) **ताकि तुम को मालूम हो जाए कि अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है और अल्लाह हर चीज़ को अपने इल्म में समाए हुए** (है इसलिए अल्लाह तआ़ला की ताबेदारी करना ज़रूरी) **है**(12)

नोटः- ऊपर आयत से इतनी बात तो साफ़ तौर पर साबित है कि आसमान की तरह ज़मीनें भी सात हैं। मगर वो ज़मीनें कहां ऊपर नीचे हैं आसमान की तरह या अलग-अलग जगह हैं इस बारे में कुछ बताया नहीं गया। और न इसके जानने की ज़रूरत है न उस पर किसी शरई हुक्म का मदार है। बस जितना बता दिया उस पर यक़ीन रखना काफ़ी है।

66-सूरत-तहरीम

इस मदनी सूरत में '2' रूकू और '12' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِىْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ
لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰٮكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝٢ وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِىُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ
حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ
اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِىَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝٣ اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ
اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰٮهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰۤٮِٕكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝٤ عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ
يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰۤٮِٕبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰۤٮِٕحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝٥

आयत नं० 01 से 05

ऐ नबी जो चीज़ अल्लाह ने आप के लिए हलाल की है आप (क़सम खाकर) **उसको** (अपने ऊपर) **क्यों हराम करते हैं** (फिर वो भी) **अपनी बीवियों को राज़ी करने के लिए, और अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाला महरबान है** (कि गुनाह तक को मुआफ़ कर देता है और आपसे तो कोई गुनाह भी नहीं हुआ इसलिए यह नाराज़ी नहीं बल्कि हमदर्दी से आप को कहा जाता है कि आप ने एक जाइज़ नफ़े को छोड़ने की तकलीफ़ क्यों उठाई)(01) **अल्लाह तआ़ला ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी क़समों का खोलना** (यानी क़सम तोड़ने के बाद उसके कफ़्फ़ारा अदा करने का तरीक़ा) **तय कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा मालिक** (और मददगार) **है, और वो बड़ा जानने वाला बड़ी हिकमत वाला** (है, इस लिए वो अपने इल्म व हिकमत से तुम्हारी भलाइयों और ज़रूरतों को जानकर तुम्हारी बहुत सी मुश्किलों को आसान कर देने के तरीक़े तय कर देता है जैसा कि कफ़्फ़ारे से क़सम की पाबन्दी की तकलीफ़ का इलाज कर दिया) **है**(02) **और** (आगे पैग़म्बर की बीवियों को सुनाते हैं कि वो वक़्त याद कीजिए) **जब कि पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **ने अपनी किसी बीवी से**

चुपके से एक बात कही (वो बात ये ही थी कि मैं फिर शहद न पियूंगा मगर किसी से कहना नहीं), **फिर जब उस बीवी ने वो बात** (दूसरी बीवी को) **बता दी और पैग़म्बर को अल्लाह तआ़ला ने** (वही से) **उसकी ख़बर कर दी तो पैग़म्बर ने** (उस राज़ खोलने वाली बीवी को) **थोड़ी सी बात तो जिता दी** (कि तूने हमारी यह बात दूसरी से कहदी) **और थोड़ी सी बात को टाल गये** (ताकि अपनी ग़लती पर ज़्यादा शर्मिन्दा न हो), **तो जब पैग़म्बर ने उस बीवी को वो बात जिताई तो वो कहने लगी कि आप को इस की किसने ख़बर दी, आपने कहा कि मुझको बड़े जानने वाले ख़बर रखने वाले** (यानी अल्लाह) **ने ख़बर कर दी(03) ऐ** (पैग़म्बर की) **दोनो बीवियो अगर तुम अल्लाह के सामने** (अपनी ग़लती पर) **तौबा कर लो तो** (बेहतर है और) **तुम्हारे दिल** (इस तरफ़) **झुक रहे हैं, और अगर** (इसी तरह) **पैग़म्बर के मुक़ाबिले में तुम दोनो कार्रवाइयां करती रहीं तो** (याद रक्खो कि) **पैग़म्बर का दोस्त अल्लाह है और जिब्रील है और नेक मुसलमान हैं और उनके अलावा फ़रिशते** (आप के) **मददगार हैं** (मतलब यह कि तुम्हारी इन साज़िशों से पैग़म्बर का कोई नुक़सान नहीं बल्कि तुम्हारा ही नुक़सान है क्योंकि जिसके हिमायती ऐसे हों उसके ख़िलाफ़ कार्रवाइयां करने का अन्जाम बुरा ही बुरा है)**(04) अगर** (तुम यह समझो कि हम से बेहतर औरतें कहां से आएंगी तो जान लो कि अगर) **पैग़म्बर तुम औरतों को तलाक़ देदें तो उन का रब बहुत जल्दी तुम्हारे बदले उन को तुम से अच्छी बीवियां देदेगा जो मुसलमान ईमान वाली ताबेदारी करने वाली तौबा करने वाली इबादत करने वाली रोज़ा रखने वाली होंगी कुछ बेवा और कुछ कुवारी होंगी** (कुछ बातों में बेवा भी पसन्द होती है जैसे तजरबा, सलीक़ा हम उम्री वग़ैरह)**(05)**।

नोटः- एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बीवी के पास शहद पिया तो दूसरी बीवी ने शिकायत की कि आपने मग़ाफ़ीर पिया है जो एक क़िस्म का गोन्द होता है जिसमें बू होती है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बदबूदार चीज़ों से नफ़रत थी इसलिए आप ने क़सम खाली कि मैं फिर शहद न पियूंगा और बीवी से कह दिया कि इस बात का किसी से ज़िक्र न करें मगर उन्होंने एक और बीवी से कह दिया क्योंकि एक हलाल चीज़ को हुज़ूर ने क़सम खाकर अपने ऊपर हराम कर लिया था इस पर ये आयतजें उतरीं आपने क़सम तोड़ दी और कफ़्फ़ारे में एक गुलाम आज़ाद कर दिया था।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا قُوۡۤا اَنۡفُسَكُمۡ وَاَهۡلِيۡكُمۡ نَارًا وَّقُوۡدُهَا النَّاسُ وَالۡحِجَارَةُ عَلَيۡهَا مَلٰۤئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا
يَعۡصُوۡنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمۡ وَيَفۡعَلُوۡنَ مَا يُؤۡمَرُوۡنَ ۝٦ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَا تَعۡتَذِرُوا الۡيَوۡمَ ؕ اِنَّمَا تُجۡزَوۡنَ مَا
كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ۝٧

आयत नं० 06 से 07

ऐ ईमान वालो तुम अपने को और अपने घर वालों को (दोज़ख़ की) **आग से बचाओ जिस का ईंधन इन्सान और पत्थर हैं** (अपने को बचाना खुद हुक्मों की ताबेदारी करना और घर वालों को बचाना उन को दीन की बातें सिखाना और उन पर पाबन्दी कराने के लिए कोशिश करना है आगे दोज़ख़ का बयान है कि) **जिस पर सख़्त दिल** (और) **मज़बूत ताक़तवर फ़रिशते** (तैनात) **हैं** (कि न वो किसी पर रहम करें न कोई उन का मुक़ाबिला करके बच सके) **जो अल्लाह की किसी हुक्म में** (ज़रा) **नाफ़रमानी नहीं करते और जो कुछ उनको हुक्म दिया जाता है उस को** (फ़ौरन) **पूरा करते हैं(06)** (बस दोज़ख़ में ऐसे फ़रिशते तैनात हैं जो काफ़िरों को दोज़ख़ में दाख़िल करके छोड़ेंगे और उस वक़्त काफ़िरों से कहा जाएगा कि) **ऐ काफ़िरों तुम आज बहाने मत बनाओ** (कि बेकार है) **बस तुम को उसी की सज़ा मिल रही है जो कुछ तुम** (दुनिया में) **किया करते थे(07)।**

नोटः- ऊपर आयत से साबित हुआ कि हर आदमी पर फ़र्ज़ है कि अपनी बीवी और औलाद को शरीअत की ज़रूरी बातें और हलाल व हराम के हुक्म सिखा दे और उस पर चलाने के लिए कोशिश करे। और कुछ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा अज़ाब में वो आदमी होगा जिसके बीवी बच्चे दीन से जाहिल और बेपरवा हों। (रूह)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا تُوۡبُوۡۤا اِلَى اللّٰهِ تَوۡبَةً نَّصُوۡحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمۡ اَنۡ يُّكَفِّرَ عَنۡكُمۡ سَيِّاٰتِكُمۡ وَيُدۡخِلَكُمۡ جَنّٰتٍ
تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ۙ يَوۡمَ لَا يُخۡزِى اللّٰهُ النَّبِىَّ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ ۚ نُوۡرُهُمۡ يَسۡعٰى بَيۡنَ اَيۡدِيۡهِمۡ وَ
بِاَيۡمَانِهِمۡ يَقُوۡلُوۡنَ رَبَّنَاۤ اَتۡمِمۡ لَنَا نُوۡرَنَا وَاغۡفِرۡ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۝٨ يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ جَاهِدِ
الۡكُفَّارَ وَالۡمُنٰفِقِيۡنَ وَاغۡلُظۡ عَلَيۡهِمۡ ؕ وَمَاۡوٰٮهُمۡ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئۡسَ الۡمَصِيۡرُ ۝٩ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيۡنَ

كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّ امْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا
عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّ قِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠ وَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ
فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِیْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِی الْجَنَّةِ وَ نَجِّنِیْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَ عَمَلِهٖ وَ نَجِّنِیْ مِنَ الْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ۝١١ وَ مَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِیْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَ صَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَ
كُتُبِهٖ وَ كَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝١٢

आयत नं० 08 से 12

(इन आयतों में दोज़ख़ से बचने का तरीक़ा बताया गया है और वो ही घर वालों को भी बताने का हुक्म है कि) **ऐ ईमान वालो तुम अल्लाह के सामने सच्ची तौबा करो** (यानी दिल में गुनाह पर पछतावा और आगे कभी उसके न करने का पक्का इरादा और दीन के हुक्मों की पाबन्दी की कोशिश), **उम्मीद** (यानी वादा) **है कि तुम्हारा रब** (इस तौबा की वजह से) **तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर देगा और तुम को** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी** (और यह उस दिन होगा) **जिस दिन अल्लाह** (अपने) **पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को और जो मुसलमान** (ईमान और दीन की रू से) **उनके साथ हैं उनको रूसवा न करेगा उन का नूर उनके दाहिने और उनके सामने दौड़ता होगा** (जैसा कि सूरत 'हदीद' में आ चुका है और वो) **यह दुआ करते होंगे कि या हमारे रब हमारे लिए इस नूर को अख़ीर तक रखिए** (यानी रास्ते में बुझ न जाए) **और हमें मुआफ़ कर दीजिए, बेशक आप हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाले हैं(08) ऐ पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद कीजिए और उन पर सख़्ती कीजिए,** (दुनिया में तो ये इस सज़ा के हक़दार हुए) **और** (आख़रत में) **उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वो बुरी जगह है(09)** (आगे इसका बयान है कि आख़रत में हर इन्सान को अपना ही ईमान काम आएगा, काफ़िर को उस के किसी रिशतेदार का ईमान अज़ाब से न बचाएगा, इसी तरह मोमिन के रिशतेदार काफ़िर हों तो मोमिन को इसका कोई नुक़सान नहीं पहुंचेगा) **अल्लाह तआ़ला काफ़िरों** (की नसीहत) **के लिए नूह** (अलैहिस्सलाम) **की बीवी और लूत** (अलैहिस्सलाम) **की बीवी का हाल बयान करता है, वो दोनो हमारे ख़ास बन्दों में से दो नेक बन्दों के निकाह में थी सो उन औरतों ने उन बन्दों का हक़ बर्बाद किया** (यानी नबी होने की वजह से उन का हक़ यह भी था कि उन पर ईमान लातीं और दीनी हुक्मों में उनकी ताबेदारी करतीं जो उन्होंने नहीं की) **तो वो**

दोनो नेक बन्दे अल्लाह के मुक़ाबिले में उनके ज़रा काम न आसके और उन दोनो औरतों को (काफ़िर हो जाने की वजह से) **हुक्म हो गया कि तुम दोनो भी दूसरे जहन्नम में दाख़िल होने वालों के साथ जहन्नम में दाख़िल हो जाओ(10)** (और आगे) **अल्लाह तआला मुसलमानों** (की तसल्ली) **के लिए फ़िरऔन की बीवी** (हज़रत आसिया) **का हाल बयान करता है, जब कि उन बीवी ने दुआ की कि या मेरे रब मेरे वास्ते जन्नत में अपने नज़दीक मकान बनाइये और मुझको फ़िरऔन** (की बुराई) **से और उसके** (कुफ़्र के) **काम** (के नुक़सान और असर) **से बचा दीजिए और मुझ को सभी ज़ालिम** (यानी काफ़िर) **लोगों** (के खुले और छुपे नुक़सान) **से बचाए रखिए(11) और** (ऐसे ही मुसलमानों की तसल्ली के लिए अल्लाह तआला) **इमरान की बेटी हज़रत मरयम का हाल बयान करता है जिन्होंने अपनी आबरू को** (हराम और हलाल दोनो से) **बचाए रक्खा** (यानी कभी किसी मर्द से तन्हाई में मिलाप नहीं किया) **तो हम ने उसमें** (जिब्रील अलैहिस्सलाम के वास्ते से) **अपनी रूह फूंक दी और उन्होंने अपने रब की बातों** (जो फ़रिशतों के वास्ते से पहुंची थी) **और उसकी किताबों की तस्दीक़ की** (जिन में तौरेत व इन्जील भी हैं यह बयान है उनके अक़ीदों का) **और** (नेक कामों का बयान यह है कि) **वो ताबेदारी करने वालों में से थी(12)।**

नोटः- हज़रत अ़ली रज़ि० से सवाल किया गया कि तौबा क्या है तो आप ने फ़रमाया जिन में '6' चीज़ें जमा हों।

(1) अपने पिछले बुरे काम का पछतावा।
(2) अल्लाह तआला के जो फ़र्ज़ व वाजिब छूट गये हैं उन को अदा करना।
(3) किसी का माल वग़ैरह ज़ुल्म से ले लिया था तो उसकी वापसी।
(4) किसी को हाथ या ज़बान से सताया और तकलीफ़ पहुंचाई थी तो उससे मुआफ़ी।
(5) आगे को उस गुनाह के पास न जाने का पक्का इरादा।
(6) और यह कि जिस तरह उसने अपने जी को अल्लाह की नाफ़रमानी करते हुए देखा है अब वो ताबेदारी करते हुए देखले।